भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 37 अंक : 4 | 21.7.2014 सोमवार (जुलाई - अगस्त) | शुल्क – प्रति अंक : ₹ 20.00 वार्षिक : ₹ 100.00

चैतन्यप्रहरी गुरुहरि पप्पाजी महाराज के प्राकट्य पर्व पर...

- जिनका प्रागट्य अवनि का मंगल कहा जाए।
- जिनका दर्शन सभी को शांति प्रदान करे।
- जिनकी परावाणी सभी के अंतर का मैल धोए।
- जिनका निर्व्याज प्रेम जन्मों से चिपके हठ, मान, ईर्ष्या, मान, मत्सर के भाव से मुक्त होने का बल दे।
- जिनका आदर्श वर्तन सभी को अध्यात्म जीवन की प्रेरणा दे।
- जिनका मौन हमें जागरूक करे।
- जिनकी कृपा से जीवन धन्य बने।
- जिनके अंतर की प्रसन्नता पाकर मुमुक्षु जीतेजी ‘अक्षरधाम’ का सुख, शांति और आनंद पाए।

ऐसी **दिव्य विभूति गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य यानि– गुणातीतभाव के मूर्तस्वरूप का अवतरण!** हम सभी जानते हैं कि 1952 में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा ब्रह्मस्वरूप काकाजी को हुए साक्षात्कार की ऐरी-ग़ैरी बातें सुन कर, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी अफ्रीका से भारत-मुंबई आए। पर, भारत आने के बाद ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी भी गुरुवर्य योगीजी महाराज में ऐसे लयलीन हुए कि 1 जून 1952 के मंगलकारी दिन उन्हें प.पू. बापा में ‘प्रगट प्रभु’ की प्रतीति हुई।

सही मायने में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी का आगमन पूर्व नियोजित था। क्योंकि–**ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने पहले ही कह दिया था–**

मेरा भाई आएगा और... मेरे कार्य में मेरा साथ देगा।

मानो टाटा-बिड़ला या धीरूभाई अंबाणी जैसे धनी ने किसी से धंधाकीय साथ की अपेक्षा रखी हो, तो वो कोई

'सामान्य' तो हो ही नहीं सकता; इसी प्रकार, ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के साथ-सहयोग से बहनों के लिए भगवान भजने की राह खोल दी और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी ने भी बहनों की जिम्मेदारी ले ली व बखूबी निभाई। वे ब्रह्मस्वरूप काकाजी की समकक्ष विभूति ही होंगे न?

ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की प्रगल्भ तथापि शांत-प्रशांत मूर्ति को देखते ही अपने आप हरेक का मस्तिष्क व हृदय सहज झुकने लगा और... संबंध में आने वालों के जीवन को 'उत्सव' में परिवर्तित करते हुए–

❖ अनेक प्रकार की विकट परिस्थितियों में अपशब्दों, अपमान, विरोध की माया को स्वयं तो जीते, इतना ही नहीं, उनसे जुड़े आश्रित भी आंतरिक एवं बाह्य माया को जीत सकें, ऐसा समर्थ बनाया।

❖ स्वयं उदासी, विक्षेप और दोषबुद्धि रहित रहते हुए संबंध वालों को देह और देहभाव से परे करके उनके हृदय में आनंद भर कर जीवन को शाश्वत् बनाया।

❖ मुक्तों के प्रति दिव्यभाव रखते हुए सब कुछ 'ब्रह्मनियंत्रित' माना और संबंध वालों को भी उस राह पर अग्रसर किया।

❖ अपनी ओर साधु की दृष्टि रखते हुए, दासभाव-नम्रभाव से स्वयं जीकर, संबंध वालों को वैसा जीवन जीने प्रेरित किया।

यूँ, सभी मुमुक्षुओं के लिए 'गुणातीतभाव' में जीना सुलभ किया। उनके प्रत्येक विचार-क्रिया का एक ही हेतु कि 'महामानव' के समाज का सर्जन हो। जो अहंशून्य जीवन से छुटकारा पाकर प्रभुप्रेरित जीवन जीने तत्पर हों, ऐसे जीवनमुक्तों के समाज की रचना करना ही प.पू. पप्पाजी का संकल्प था। आश्रितों की चित्तशुद्धि जैसे कठिन कार्य को–जो बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के लिए भी नामुमकिन है, वह प.पू. पप्पाजी ने अपने सामर्थ्य और अकल्पनीय बल से संपन्न किया। इस हेतु धैर्य रखते हुए उन्होंने खूब सहन भी किया। संबंध मात्र में आए हुए की पात्रता हो या न हो, उसमें हिम्मत हो या नहीं, उसकी अभिप्सा हो या न हो, लेकिन बस जोग में आया है, वही उसका सौभाग्य मान कर हर एक को अपनाया। उनके जीवन का संपूर्ण परिवर्तन करके 'प्रभु के प्रकटीकरण' की अनुभूति कराई। इससे भी अधिक, समय-समय पर प्रभु के बल से जीने की करामात देकर जीव की निरंतर प्रगति चाही।

तो आइये, इस **रक्षाबंधन** के अवसर पर **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के 98वें प्राकट्य पर्व** निमित्त, 'गुणातीत ज्योत' सत्संग पत्रिका में वर्षों पहले **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज** द्वारा दी गई सूझ को अपना कर, अपने जीव को स्वस्थ करें और उनसे मिला 'ब्रह्मसूत्र'–

'गरजु बन कर सेवा करो, दिव्यभाव रख कर सहन करो' –

को जीवन का ध्येय बना कर सच्चा 'रक्षाकवच' प्राप्त करें...

प.पू. पप्पाजी *ने कहा : 'योगी तारा गावामां...' भजन गाओ...*

अब ***'फगवा'*** *ये है।*

(फगवा यानि – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने अनादि महामुक्त भगतजी महाराज पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें आशीर्वाद मांगने के लिए कहा था, तब प.पू. भगतजी महाराज ने जो प्रार्थना की थी वह।)

जीवनभर हमें यह मांगना है – कसनी को 'भक्ति' मान कर उसे अपने प्रभु पर लगाएँ। प्रभु का संबंध दे दें।

अक्षरपुरुषोत्तम का सारा ज्ञान इसमें आ जाता है। मनमानी छोड़नी पड़े – उसे कसनी कहते हैं।

मन का अमन करना ही है। अमन करने के बाद फिर समन करना है, सो कसनी लगती है।

केवल मन का अमन करने में कष्ट नहीं होता।

एक कोने में जाकर चुपचाप बैठे रहें ऐसा नहीं, बल्कि फिर उनकी (सत्पुरुष की) व उनके मुक्तों की सेवा करनी।

ताकि हमारा मन बिल्कुल निष्काम हो जाए, डीस्टील्ड वॉटर जैसा साफ़ हो जाए।

संबंध से ही बस कल्याण। संबंध है? सेवा कर लो।

किसी की क्रिया, प्रकृति, स्वभाव हमें नहीं देखना। वह भगवान देखेंगे, जो होगा वह भगवान देखेंगे।

उसके प्रारब्ध का उपयोग करके वे अपने आप घड़ाई करेंगे। उसे भीतर में उगेगा।

किसी से कहें कि तू ऐसा कर या वैसा कर, वह वैसा नहीं करेगा।

उसकी कोई वृत्ति ही है, सो तुम्हारा दिया सारा ज्ञान सरक जाएगा।

भले ही कितना ज्ञान दोगे, फिर भी वह निकम्मा जाएगा।

भगवान ही उसके प्रारब्ध का इस्तेमाल करके, उसे अंतर्दृष्टि करवा कर, उसे आगे लेते रहेंगे।

हमें तो, ***जहाँ तक हो सके उतने सुहृद्भाव से सेवा करनी – यह अपना फर्ज़ है।***

संबंध है न! वह कभी न कभी 'गुणातीतभाव' में रहता होने वाला ही है।

भगवान उसे ऐसा बनाने वाले ही हैं। छोड़ने वाले नहीं हैं और जो समय लेते हैं वो जरूरत होगी, सो लेते हैं।

हमें समझ नहीं आएगा। सो, ***किसी का क़ाज़ी नहीं बनना।***

'संजीवनी मंत्र' और 'यह फगवा' हमारा जीवन बने, सहज ऐसी आदत पड़ जाए।

अखंड प्रगति करते चैतन्य माने जाएँ और दिखाई दें – वही पूर्णाहुति।

अपनी साधना की पूर्णाहुति हो गई कब माना जाए? हमें ही अपना गुरु बनना चाहिए।

कोई क्या कहता है? कोई कहे (सर्टीफीकेट दे) – हुए या नहीं हुए, बड़े हो गए या छोटे ही रहे हों –

वह तो व्यावहारिक रीति से जिस प्रकार रहते होंगे, वैसा होता है। उसकी कोई क़ीमत नहीं।

हमें अपने अंतर में ही देखना है। अंतर प्रशांत व स्थिर रहे।

कर्ता-हर्ता, नियंता वच. गढडा प्रथम 62 जैसा (हमें मिले) प्रत्यक्ष स्वरूप को मानें।

तो–

उसे प्रभु मिले हैं ! उसका संबंध है ! महाराज... महाराज बस।

मुझे सेवा करने का मौका दिया है, तो मुझे तो 'मूर्ति' लूट लेनी है।

प्रभु आप हैं, सो उसमें कुछ तो अच्छा होगा न !

दूसरा कुछ ग़लत देख कर हमें क्या करना है ? हमें कहाँ भगवान होना है ? गुरु देखेंगे, भगवान देखेंगे।

मित्रभाव से यदि वह हमसे कुछ पूछे तो भगवान को धार कर कहें। न कहने योग्य हो, तो न कहें। उसे भगवान का संबंध है, तो सुहृद् प्रार्थना करें।

संकल्प, प्रार्थना और भजन करना, वो हम करते रहें और अपने स्वधर्म में वर्तते रहें।

फलस्वरूप, अक्षरधाम में रहने की आदत ही पड़ जाएगी।

पुरानी आदत के मुताबिक हमारा तंत्र चलता है।

'अक्षरधाम' की आदत पड़ी हो, तो अक्षरधाम की शांति रहा करे। फिर चाहे कहीं भी जाओ न !

हम, हमारे ठाकुर, हमारी सेवा और हमारे स्पंदन देखते रहें। हमारे यहाँ सब 'ब्रह्मनियंत्रित' ही चलता है।

उसमें अखंड प्रशांत अवस्था रहनी चाहिए।

भगवान द्वारा चैतन्यशुद्धि की लीला ही चल रही है, ऐसा हमेशा मानते रहें।

सारा गुणातीत ज्ञान सरलता से हम सभी समझ सकें, अनपढ़ से अनपढ़ समझ सके,

ऐसी कक्षा पर लाकर अब रख दिया है।

मैं जब आया तब मुझे समझ नहीं थी कि ध्यान किसका किया जाए ?

कैसा ध्यान करना ? और क्या करना ? यह भी समझ नहीं थी।

*यह तो **'योगीजी महाराज'** ने सिखाया कि*

प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप जो है, उसमें सभी स्वरूप आ गए। दो चरणारविंद की उपासना!

अतः जिस समय जिसमें निष्ठा बैठी हो, उसी समय ही पूरा कर लेना चाहिए (ब्राह्मीस्थिति पा लेनी चाहिए)।

जहाँ जुड़े हों, वहाँ।

अभी कितना अच्छा जोग दिया है, तो ऐसा जीने का सभी को बल मिल जाए यही प्रार्थना।

✡✡✡

'परावाणी' से अनमोल चिंतनकणिकाएं

*(भगवत् कृपा के पिछले अंक में **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज** के प्राकट्य पर्व निमित्त, **'परावाणी'** पुस्तक से **प.पू. गुरुजी** द्वारा चयन किए कुछ सूत्र हमने पढ़े। आइए, इस अंक द्वारा और लाभ उठाएँ...)*

- बड़े पुरुष को राजी करके उनकी दृष्टि में आ जाएँ, तो हमारा काम हो जाए।
- बड़े पुरुष एवं भगवान जीव को छोड़ते नहीं हैं। एक भूत यदि हमें चिपका हो, वह नहीं छोड़ता; तो, भगवान और संत जो मिले हैं, वे हमें कैसे छोड़ेंगे ?
- बड़े पुरुष जीव पर खूब दया करते हैं, लेकिन उनके होकर रहना पड़ता है। बड़े पुरुष सिर्फ जीव के भूखे हैं।
- बड़े संत जो चाहे वो कर सकते हैं, वे बलवान हैं। जीव को जीवन देना और बचाना भगवान व संत के हाथ में है, परंतु विश्वास हो तो काम हो जाए।
- संत से 'संबंध' हुआ हो, फिर वे लाख गाँव दूर हों, पर करीब हैं और 'संबंध' न हो, तो पास होते हुए भी दूर हैं।
- छोटे से छोटे सत्संगी एवं संत की **भगवान के भाव** से सेवा करें, तो श्रीजी महाराज (भगवान स्वामिनारायण) राज़ी होते हैं।
- 'दास का दास' होकर रहना यही 'सच्ची भक्ति' है।
- अभ्यास करते-करते कितने साल गुज़र गए, सिर के बाल सफ़ेद हो गए। इसका कोई अंत आएगा या नहीं? पढ़ाई का अंत आता है, पैसों का अंत आता है, यूँ इसमें भी अंत आना चाहिए। ज्ञान का अंत यह है कि–ब्रह्म और परब्रह्म का ज्ञान हो जाए और अंतःशत्रु से सावधान रहें, तब इस ज्ञान का अंत आ गया।
- भगवान कुछ शीश ले नहीं लेते। लेकिन, हम भावना रखें कि–हे महाराज! सब कुछ आपका ही है; तो भी बहुत है। लेकिन, हम ऐसी भावना भी नहीं करते।
- बड़े पुरुषों ने जो वचन कहे हैं, वो हम कर न पाएँ ऐसे नहीं होते। हमसे न हो पाए, हम न कर पाएँ ऐसा तो बड़े पुरुष कहें ही नहीं और शास्त्र में लिखे न जाएँ। लेकिन, हम मन पर लेते नहीं हैं, सो कठिन लगता है।
- बड़े पुरुष की सेवा की हो, तो मौज मिल जाए और काम आसान हो जाए। धारा निशान पड़ जाए, कठिन न पड़े।
- बड़े पुरुष राजी हो जाएँ, तो सारे काम पार उतरें। बड़े पुरुष को राजी करने के चार उपाय हैं–

  1. उन्हें कुछ चाहिए हो, वह ला दें।
  2. उनकी देह की सेवा करें।
  3. हाथ जोड़ कर विनय करें।
  4. अनुवृत्ति – भगवान और सत्पुरुष जो कहें वो करें और उसमें कोई शंका न करें, वह 'अनुवृत्ति'।

* **बड़े पुरुष के अभिप्राय में जुड़ जाएँ, तो प्रसन्नता अलग प्रकार की मिले।**
* अहिंसा किसे कहा जाए? किसी भी जीव–प्राणी मात्र को दुःख हो, ऐसा कार्य हम न करें–वो **अहिंसा**! जीव को जन्म और मृत्यु का चक्कर जो लगा हुआ है, उससे जीव को उबार लें–वो **परम अहिंसा**। जीव को माया से पर करना–वो **परम अहिंसा**।
* कोई एक काम कर सकता है, कोई दो काम कर सकता है और कोई चार काम कर सकता है। लेकिन, दुनिया में कोई करोड़ काम नहीं कर सकता। पर, सभी कामों से निजात पाकर सत्संग की बातें सुनते हैं, वह हम करोड़ों काम करते हैं। यमलोक, लख चौरासी, गर्भवास वगैरह पर सेरे लगा रहे हैं। हम बैठे यहाँ होते हैं, लेकिन सेरे वहाँ लगते हैं।
* बड़े पुरुष के वाक्य खूब ताक़तवर हैं, लेकिन हमें विश्वास नहीं आता और आशंका होती है कि वे बोलते हैं, पर ऐसा भी होता होगा क्या? कोई हुँडी लिख देता है, तो पैसे मिल जाएँगे, यह सच मान लेते हैं; ऐसे ही यह भी सच है। बड़े संत झूठ नहीं बोलते, छलावा नहीं करते।
* किसी से दोषबुद्धि न रखें, अरुचि न रखें, स्वयं नियम-धर्म का उल्लंघन न करें और सत्संग में सदैव दिव्यभाव रहे तो समझना कि हम विपरीत माहौल में नहीं घिरे हैं।
* हमारे जीवन का आधार 'भगवान की मूर्ति' बन गया हो, तो इसके बिना घड़ीभर रह ही नहीं सकते।
* मन को मारना, पर मन का कहा नहीं करना।
* सत्पुरुष और भगवान हमारे पाप धो ड़ालते हैं, लेकिन उनका संग रखना चाहिए।
* संत समागम से पाप जल जाते हैं।
* प्रीति हो, तो अपने प्रियतम की मरजी का उल्लंघन नहीं होगा।
  प्रीति यानि उनकी मरजी, उनका अभिप्राय क्या है, उसका अच्छी तरह पालन करे। हेर-फेर कर दे, इसे कहाँ प्रीति गिनी है? **प्रीति** का लक्षण है–**संत के तरीके से लग पड़े**, उनके अभिप्राय में जुड़ जाए।
* कुछ दे देना पड़े, कष्ट हो, इधर-उधर/अस्त-व्यस्त हो जाए, फिर भी अभिप्राय में जुड़े वह–'प्रीति'। सुधन्वा अर्जुन की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ था, लेकिन श्रीकृष्ण भगवान के अभिप्राय में नहीं जुड़ पाया तो उसका मस्तक कटा, जबकि अर्जुन अभिप्राय में जुड़ गया तो महाराज ने उसकी मूर्ति 'नर-नारायण' के रूप में अमदावाद मंदिर में पधराई।
* भगवान और संत के वचन कदाचित् हम न मान पाते हों या जीव में बैठते न हों, फिर भी आज्ञा का उल्लंघन तो न ही करें। फिर वह अपने आप बुद्धि में बैठ जाते हैं।
* अभिप्राय में जुड़ जाए, वही 'भक्त'!
  इसके सिवा हम **कितना ही कार्य करें, धर्म का पालन करें, निर्दोषबुद्धि रखें, लेकिन 'अभिप्राय' में जब तक नहीं जुड़ेंगे, तब तक प्रसन्नता प्राप्त नहीं होगी।**
* आज्ञा का पालन करना–यह सिद्धांत है। भले कितना ही खड़काए, सुख-दुःख आए, लेकिन (संत की) मरजी के मुताबिक वर्ते उसे 'अभिप्राय' में जुड़ गया कहा जाए।

* सच्चे प्रेम का लक्षण यही है कि आज्ञा का उल्लंघन न करें। भगवान और संत से अधिक प्यारा कुछ न हो।
* 'भक्त' जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ भगवान की मूर्ति उसके साथ जाती है।
* गर्व आ जाए, सुहृद्‌भाव खंडित हो जाए और संगठनभाव कम हो जाए–यूँ मनुष्यभाव आ जाए, तो भगवान की नज़र कड़ी हो जाती है। अंतर में उद्वेग होता है। सुहृद्‌भाव बढ़े, मित्रभाव बढ़े और एक-दूजे की महिमा समझें–तो, भगवान की नज़र प्रसन्न दिखती है, जिससे अंतर में ठंडक होती है और शुभ संकल्प उठते रहते हैं।
* हमें अपने दोष देखने चाहिए, परंतु यदि बड़े पुरुष कहें कि तुम ऐसे 'भक्त' हो, तो फिर यूँ नहीं मानना कि मैं भक्त नहीं हूँ।
* **संत के साथ तो हठ, मान, ईर्ष्या न रखें, परंतु भक्तों के साथ आपस में भी हठ, मान, ईर्ष्या न रहे, वह 'संबंध' किया कहा जाए।**
* शास्त्र का ज्ञान जैसे-जैसे पढ़ेंगे, मोक्ष की प्यास बढ़ती जाएगी और वही शास्त्र सत्पुरुष द्वारा सुनेंगे, तो मोक्ष की प्यास बुझेगी।
* धर्मकार्य तत्काल करना, व्यवहार का कार्य सोच-समझ कर करना।
* बड़े संत मिलने कठिन हैं, मिल जाएँ तो उन्हें मानना कठिन है।
* ज्ञान का प्रवाह बहता हो, भगवान की कथा-वार्ता चलती हो, उस ज्ञानगंगा में बैठ जाएँ तो हमारी आत्मा जो मैली हुई है, वो साफ़ हो जाएगी।

(शेष अगले अंक में)

✡✡✡

'अनुष्ठान शिविर' का अनुग्रह...

हर वर्ष की भांति इस बार भी 15 मई से 12 जून–ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व तक श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर–अशोकविहार में प.पू. गुरुजी की निश्रा में **'अनुष्ठान शिविर'** का आयोजन हुआ।

प्रथम दिन **पू. देवेशजी, पू. राजेन्द्रजी** एवं पुराने जोगी अक्षरनिवासी पू. रमणभाई पकाई साहेब की धर्मपत्नी **पू. दमयंती बहन** ने दीप प्रज्जवित करके शिविर का शुभारंभ हुआ। पिछले वर्ष की तरह तुलसीपत्र के साथ जल से भरे दो कटोरे श्री ठाकुरजी के श्रीचरणों में रखे गए। हर वर्ष पूर्व के कई मुक्त मंदिर से अवश्य जुड़ जाते हैं। सो, इन मुक्तों की जानकारी हेतु–जापान के वैज्ञानिक डॉ. मसारू ऑमोटो ने जल की ताक़त के विषय में अपना जो अनुभव बताया था, उसे प.पू. गुरुजी ने पहले दिन पढ़वा कर **'प्रसादी के जल'** की विशेषता बताई थी।

प.पू. वशीभाई अकसर कहते है–

'कुछ नया न करें, वो गुरुजी नहीं!' सो, जैसे कि **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** ने अपनी बातों में एक जगह कहा है–

यदि तुम सत्संग करने के लिए आओ, तो तुम्हारे घर बाजरा मैं भर दूँ और महीने का दस रुपया दूँ।

स्वामी ने सत्संग की कैसी महिमा बताई! गुरु गुणातीत की बात पर अमल करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने धुन शुरू होने से पूर्व कहा–

जो इस अनुष्ठान शिविर में पूरे महीने ठीक सात बजे मंदिर के हॉल में आ जाए और एक भी दिन नागा नहीं करेगा, उसे मैं बढ़िया प्राईस दूँगा।

सत्संग करने की हमें गरज होनी चाहिए, पर यहाँ तो सत्पुरुष सत्संग कराने गरज रखते हैं। इस प्रकार अनुष्ठान शिविर की शुरुआत हुई।

प.पू. गुरुजी की बात मद्देनज़र रखते हुए रोज कई मुक्त तो सायं 6:30 तक मंदिर आ जाते। गर्मी में दूर से आते मुक्तों को ठंडक देने के लिए **पू. सुहृद्स्वामी** शरबत की व्यवस्था रखते। 7:00 बजे तक तो **'कल्पवृक्ष'** हॉल भर जाता, हॉल के बाहर पाँच मिनिट पहले तो कोई एक-दूसरे को 'जय स्वामिनारायण' कहने के लिए रुकता भी न था। सबको बस यही कि 7:00 बजे से पहले हॉल में पहुँच जाना है और गुरुजी को राज़ी कर लेना है।

शिविर में 'स्वामिनारायण महिमा स्तवन' सुनने के बाद, चालीस मिनिट की धुन, भजन एवं **'मार्गदर्शिका'**–सी.डी. द्वारा प.पू. गुरुजी के आशीर्वचनों का पान किया। 'मार्गदर्शिका' सुन कर प.पू. गुरुजी ने कहा था कि ये सब बातें सुन कर मेरा भी मानो रिवीज़न हो गया!

पर, शिविर दौरान प्रकृति द्वारा कल्पना से परे की कसौटी हुई। 30 मई की सायं 5:00 बजे तेज़ तूफान के साथ इतनी बारिश शुरू हुई कि रास्ते में काफी पेड़ गिर गए, ट्राफिक डीस्टर्ब हो गया और काफी मुक्त समय पर हॉल में दाखिल नहीं हो पाए। कोई पाँच मिनिट, तो कोई दस मिनिट, कोई एक घंटा और कोई तो सिर्फ एक मिनिट देरी से हॉल में दाखिल हुआ। भीतर से कई तो दुःखी हुए और आँखों से आँसू बहने लगे –

ओह! गुरुजी की बात हम झेल नहीं पाएँ।

सभी के अंतरद्वंद्व का उत्तर देते हुए **प.पू. गुरुजी** ने धुन से पहले मर्म की बात की –

*मैंने पहले ही इशारे में बात की थी कि हम कई क्रियाएं करते हैं, तो ऐसा सोचते हैं कि अब तो मुझे ऐसा कर ही लेना है। सत्संग की कथा सुनते हैं तो ऐसा होता है कि जैसा काकाजी चाहते हैं, वैसा बरत लेना ही है, अब मैं ऐसे बरतना शुरू कर ही देता हूँ। इसमें अपने **'पुरुष प्रयत्न का बल'** है। पर, अगर यह भावना रखते हुए हम काकाजी को ही प्रार्थना करें कि काकाजी हमें आपकी मरजी के मुताबिक बरतना है, आप हमें बल देना और ऐसे संजोग बना देना। तो वो **'प्रभु का बल'** लिया कहलाता है। **गुणातीतानंदस्वामी** ने तो इस हद्द तक बात की कि –*

*अपने पुरुष प्रयत्न से जो साधना करने लग पड़ता है और जो भगवान के बल से भगवान भजने के रास्ते पर चलता है, इन दोनों में **'अपने पति का गर्भ'** और **'दूसरे पुरुष के गर्भ'** जितना फर्क है।*

आप सब लगे हुए थे कि अब तो टाईम से पहुँच ही जाना है। उसके बजाय प्रार्थना करनी चाहिए थी कि हे काकाजी! हमेशा टाइम पर चला जाऊँ, पहुँच जाऊँ–आपकी प्रसन्नता ले पाऊँ, ऐसा आप कर दो।

शिविर की पूर्णाहुति के निमित्त, 11 जून की रात्रि को **प.पू. वशीभाई** दर्शन देने के लिए मुंबई से आए। अगले दिन **12 जून–ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के **प्राकट्य पर्व** का मंगल दिन था! यूँ तो मंदिर में रोज महापूजा होती है। परंतु, आज की विशिष्ट महापूजा

को **प.पू. गुरुजी** ने **'मेगा महापूजा'** नाम दिया।

सुबह 9:00 बजे 'कल्पवृक्ष' हॉल में श्री ठाकुरजी के समक्ष प.पू. वशीभाई की निश्रा में पू. अभिषेक ने फूलों से सुसज्जित मंडप में 'मेगा महापूजा' शुरू की। एक महीने की शिविर में जो भी हरिभक्त आते थे, वे सभी इस महापूजा का लाभ लेने के लिए आए। महापूजा के अंत में प.पू. वशीभाई ने आशीर्वाद दिया। महापूजा में सब को अलग-अनोखी अनुभूति हुई और जैसे कि **प.पू. गुरुजी** ने भी कहा–

आश्चर्य की बात थी कि प.पू. वशीभाई भी, कमर में खूब दर्द रहने के बावजूद, साढ़े तीन घंटे तक लगातार बैठे रहे!

सायं 6:30 बजे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के **96वें प्राकट्य दिन** एवं अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति के लिए सब एकत्रित हुए। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व के साथ-साथ दिल्ली मंदिर के पुराने जोगी **प.भ. जर्नादन मोन्डेजी का 75वाँ जन्मदिन, मुंबई के प.भ. डॉ. केयुरभाई अधवर्यु का 50वाँ जन्मदिन** एवं **दिल्ली के प.भ. अनुज दुरेजाजी की शादी की 25वीं सालगिरह** भी मनाई। प.पू. गुरुजी ने आशीर्वचन में 'मेगा महापूजा' का हेतु बताते हुए मानो शिविर का सार बता दिया... अंत में रोज की भाँति ध्वनिमुद्रण द्वारा प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन सुनने के बाद प.पू. वशीभाई के आशीर्वाद से पूर्णाहुति हुई और 'आम रस' का प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

जब हम सभा में बैठे होते हैं, तब हमारा ध्यान पूर्णतः कथा-वार्ता में एकाग्र होता नहीं। सो, **12 जून** को **प.पू. गुरुजी** ने जो आशिष बरसाए, उसे एकाग्रचित्त से पढ़ कर उसकी गहनता को समझें, इस हेतु निम्न प्रस्तुत है...

...12 तारीख को हम ऐसे लेवल पर महापूजा करते नहीं हैं, पर हुआ कि वशीभाई भी आ रहे हैं, तो 'मेगा महापूजा' की जाए। मैंने कई बार बताया है कि 'पूजा' भगवान और संतों की करते हैं और **'महापूजा' यानि–भगवान, संत और सत्संगी की पूजा**–जो **बहुत पावरफुल गिनी जाती है।** एक तो 12 जून काकाजी का प्राकट्य दिन, वशी आ रहे हैं और अपनी धुन की पूर्णाहुति हो रही है, तो एक **'मेगा महापूजा'** करें... 'मेगा' का मतलब–लार्ज, लाखों गुनी हो जाती है। न्यूमेरिकली 10 लाख मेगाबाईट इसकी वॅल्यू होती है। 'मेगा' का दूसरा मतलब **'संयोजी रूप'** से कुछ करा हुआ हो। कोलीन्स की डिक्शनरी में अर्थ देखना। वशी जानते हैं कि काकाजी वॉज़ सच ए कोऑर्डिनेटिंग फेक्टर कि किसी भी तरह सबको यूनीफाई करें।

काकाजी के बारे हम लोग खुद कई बार सोचते थे कि–कोई भी घटना बनी हो, तो 'पाटिया गोठवीने' वे ठीक-ठाक कर देते। कहीं अनहॅपी इन्सीडेंट बना हो, क्वॉरलसम इन्सीडेंट या हर्टिंग इन्सीडेंट भी बना हो, काकाजी हर एक को इधर-उधर किसी तरह समझा कर सब सॅट कर देते। हम लोग भी ऐसा करते हैं, लेकिन उसके पीछे हमारा ही कोई इन्ट्रेस्ट छुपा हुआ होता है, जबकि काकाजी दोनों को युनीफाई करने के लिए सॅट करते। उनकी यही इन्टेंशन होती थी कि तुम्हारे अंदर सुहृद्‌भाव डॅवलप हो जाए। तो मुझे

हुआ कि 'मेगा' नाम ठीक है। दूसरा काकाजी ने यह भी कहा हुआ है–

'मेरी एक माला का फल एक लाख के बराबर है।'

मैंने सोचा कि यह 'मेगा' का मतलब ही आ गया। यूं, उसमें से यह 'मेगा महापूजा' की सॅटिंग की। इस संदर्भ में **काकाजी** यह कहते–

भगत लोग तो भोले हैं, टेढ़ा हम सद्‌गुरुओं का है।

खास करके पंजाब के लिए बोले थे, उसमें गुरुबक्श, सतपाल, कमलजी का नाम देते। तब वे मेइन थे वहां। मतलब ये लोग भोले हैं, इनमें भेदभाव, झंझट हम सद्‌गुरु लोग कराते हैं।

मुझे हुआ कि भक्तों को 'मेगा महापूजा' कह कर बुलाया है। सो, सेवकों से कहा कि **बापा** कहते कि *कुछ करना है, तो 'ठठारा' करो।* इन्होंने यहाँ डेकोरेशन वगैरह का ठाट-बाट भी ऐसा किया कि माहौल का सारा ओरा बदल गया! वर्ना, साढ़े तीन घंटे तक हम कथा सुन सकते हैं, यदि इन्ट्रेस्टिंग कथा चलती हो तो। तीन घंटे पिक्चर नहीं देखते? लेकिन, साढ़े तीन घंटे पूजा में इन धी प्लेज़न्ट मूड बैठना–वह बहुत मुश्किल है। पर, आज जो-जो बैठे उन सभी को हुआ कि महापूजा में बहुत आनंद आया। मैं भी नीचे बैठ कर टी.वी. पर भक्तों के फेस रीड कर रहा था, सब बड़े ख़ुशमिज़ाज़ थे। सबने कहा भी कि साढ़े तीन घंटे कहाँ चले गए, पता नहीं लगा। मैंने मज़ाक भी किया कि देवेश का भेजा दूध नहीं मिला होता, तो पता लगता।

पर, यहां जो यह आनंद आता है, उसके बारे मैं कई बार समझा चुका हूँ कि 'ब्रह्मसूत्र' में सूत्र है–**'आनंदोब्रह्म'**। जहां 'ब्रह्म' का संबंध होगा, वहाँ आनंद प्रगट होगा ही होगा।

जैसे **महाराज** ने कहा था–***'गढड़ा मेरा, मैं गढड़ा का।'***

वैसे ही **काकाजी** ने कई बार कहा हुआ है–***'दिल्ली मेरी, मैं दिल्ली का।'***

तो, यहां **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** का एक अखंड संबंध है। इसलिए यहां जो भी आएगा, उसे आनंद आएगा ही आएगा। और... इसी कारण सारा एक फेमिली न्यूक्लीयस डॅवलप हो पाया है।

दूसरा–आज जिनके शुभ दिन भी मनाए जा रहे हैं, उन लोगों के बारे में जो बातें हुईं, वो एकदम सही है। उसकी वजह यह है कि ये पहले से कहीं काकाजी के कह दो या ऐसे गुणातीत स्वरूपों के संबंध में आते रहे होंगे, तब जाकर ये सारी चीजें बनी हैं, वर्ना ये हो ही नहीं सकती। कोई कितना ही मानें, पर शराब छूट गई वगैरह को मैं बड़ी बात नहीं मानता। कोई एक निशान-डिटर्मिनेशन होता है, तो ये चीजें आराम से हो सकती हैं। इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। कई दलील करते हैं कि हम ऐसे ग्रुप में रहते हैं तो बिज़नेस के लिए, पॉलीटिक्स में भी एन्टरटेइन्मेंट के लिए हमें थोड़ा लेटीट्यूड लेनी चाहिए। पर, आज हमारे प्रधानमंत्री मोदी साहेब ने साफ़ कह दिया कि मैं शराब नहीं पीता। अब इससे ऊपर तो हमारे कोई ट्रांजेक्शन्स नहीं होते। पर यह बहानेबाजी होती है कि हमें बिजनेस करना है, तो कस्टमर को एन्टरटेइन करने के लिए उसके साथ थोड़ा लेना पड़ता है-वगैरह, वगैरह।

...**ये सारे पूर्व के मुक्त हैं।** मुझे ठीक से याद है, मैं सबूत देता हूँ। **जर्नादन** मुंबई में पहले काकाजी के कॉन्टेक्ट में आए थे। उनका यहां वल्लभगढ़ ट्रांस्फर हुआ था। काकाजी का अकसर ऐसा रहता कि वे किसी को कुछ कह देंगे, जिसकी हमें खबर भी न हो। काकाजी ने मुझे कहा था–
यहाँ से आहिर का साढू तुम्हारे पास आएगा, उसकी दिल्ली ट्रांस्फर हुई है। वो तेरे पास आएगा और तू जो कहेगा वह करेगा।
मुझे हुआ कि उसे तो जॉब करनी है और मैं जो कहूंगा वह करेगा, यह बात समझ नहीं आई। फिर सोचा, आने तो दो। वे आए, तो उन्हें काकाजी ने वहां से कह कर भेजा था–
वहां जाकर तुम गुरुजी की सेवा करना और गुरुजी अशोक विहार में जब तक रहें, तुम वहीं रह कर ठीक से सेवा करना।
वल्लभगढ़ यहां से तकरीबन तीस-चालीस किलोमीटर तो होगा। ये नांदेड़ से आए थे। यहां दिसंबर में कैसी ठंड पड़ती है वह हम जानते हैं, जो इन लोगों को रास नहीं आ सकती थी। लेकिन, काकाजी के एक वचन पर गवर्नमेन्ट की ओर से मिल रहे चार रूम का क्वॉटर छोड़ कर, यहां अशोकविहार में जनता फ्लैट के एक रूम में रहे। वह इसलिए कि काकाजी ने कहा है कि नज़दीक रह कर गुरुजी की सेवा करना। यह बहुत बड़ी बात है। सुबह-शाम डेढ़-दो घंटे बस में टंगे हुए जाना और आना। शाम को जब थके हुए आओ, तो घर में एक ही रूम–जहां बच्चे पढ़ते भी हों। उन्हें पढ़ाने का तो टाइम ही नहीं मिलता होगा? तो इस फेमिली को इसलिए मैं सेल्युट करता हूँ। सेल्युट से मतलब कि कभी गल्ती करते हैं, तो खड़काता भी हूँ, पर अपनापन कभी जा नहीं सकता।

एक चीज यह है कि अगर **हमारी** ऐसी **भीड़ाभक्ति को निरपेक्षभाव से लेंगे, तो हमने जो सेवा की, उसका फल हमें मिल सकता है। वर्ना वह सेवा काम बन जाती है।** मानो अब तो रिटायर होकर मंदिर में रहते हैं। यहां कभी किसी ने ध्यान न रखा हो या कभी इन्हें भूल गए हों। अपने यहां तो हक़ीक़त में पूरा कन्ट्रोलिंग महाराज का है। छोटी-सी चीज भी वीधाउट धी कन्सेन्ट ऑफ महाराज-विल यहां नहीं होती है। बेशक, मैं भी यह बात बहुत देर से समझा हूँ। अब मुझे इस बात का पूरा यक़ीन है कि यहां कोई भी चीज मैं चाहूँ ऐसे ही होगी नहीं। **काकाजी** एक सेन्टेंस कहते थे– ***'थोभो-थोभो-थोभो'*** –मतलब रुक जाओ, धुन सब काम करेगी। **पप्पाजी** ने भी कहा है– ***लॅट हीम वर्क, स्टॉप यॉर इंजिन।***
हम धुन करते हैं, लेकिन हमारा इंजिन स्टॉप नहीं करते। फिर कहते हैं कि पप्पाजी ने कहा वैसा तो है ही नहीं। पर, **पप्पाजी** ने पहला क्लॉज बताया है–***स्टॉप यॉर इंजिन*, मतलब तुम्हारी थिकिंग–एक्टीविटी बंद करके धुन करो एन्ड वेट; लॅट हीम वर्क, तो वे काम करते हैं।**

हमारे अंदर पड़ा हठ, ईर्ष्या और मान है, उनसे अलर्ट रहकर जैसे कि **गुणातीतानंदस्वामी** की एक बात है– ***जाणपणा रूप दरवाजे***, जिसे इंगलिश में कहेंगे–**अवर्स इज़ ए योग ऑफ कॉन्सियस्नेस**

कि महाराज काम करेंगे। सो, विटनेस बनकर देखो, तुम्हें जरूर दिखाई देगा कि महाराज ने मेरे लिए यह काम कर दिया। पर, हमारी वृत्तियों और स्वभाव के प्रवाह में हम धीरज खो बैठते हैं। थोड़ा धीरज रखोगे, तो तुम्हारी सेवा का कई गुना फल मिलेगा। बाकी फिर ऐसा सोचें कि उस समय जब इन्हें जरूरत थी, हमने कितनी सेवा की है, पर आज हमारी कोई गिनती नहीं है। तो, वो करी हुई सेवा धूल में-पानी में चली जाती है। साधु तो निभाता रहेगा, लेकिन तुम्हें जो फल मिलना चाहिए वह प्राप्त नहीं हो पाएगा। वो फल क्या? अर्थात्–अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद। जिन-जिन्होंने ऐसी सेवा की है, पर यदि इस थिंकिंग के जाल में फंसे होंगे कि *हमने सेवा की, लेकिन अब तो हमारी क़दर नहीं है;* उन्हें अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद मिला होगा क्या? खूब याद रखना, यह ज्ञान गलत नहीं है, पर हमारे समझने में फर्क है... तो, ये छोटी-छोटी बातों को खूब समझ कर सेवा करें और उसका लाभ उठाएँ।

...सब पूर्व के मुक्त ही हैं। देखो, हमारा ये **केयुर अध्वर्यु**। मैंने इसे अपना कब से समझा उसकी बात करता हूँ। मैं नक्षु जितना होऊँगा। मुंबई-कालबा देवी में होम्योपैथी और आयुर्वेद के-खास करके बच्चों के दो डॉक्टर्स थे–गणपतराम और मोतीराम अध्वर्यु। वे हमारे पूर्वाश्रम के फेमिली डॉक्टर जैसे थे, मतलब एकदम क्लोज़। बाद में शोभना भाभी के थ्रू दीप्ति सत्संग से जुड़ी। फिर उसकी मैरेज की सॅटिंग हुई और पूछने पर पता चला कि लड़का तो डॉ. मोतीराम का पोता है। मैंने कहा–देखो, ये अपनी लड़की अपने घर में ही गई है। वे ओरिजनली चुस्त स्वामिनारायण–सूरत वाले इच्छापोरिया के लड़के हैं। उनकी फोटो में भी स्वामिनारायण का बड़ा तिलक चांदला लगाया हुआ है। तो मेरा कहना यह है कि ऐरे-गैरे इकट्ठे नहीं हुए हैं, सब कहीं न कहीं जुड़े हुए हैं। इसीलिए उनके भीतर के संस्कार बोलते हैं, वर्ना ऐसा हो भी नहीं सकता।

...**अनुज** ने जो बात की उसे समझाता हूँ। यहां दूसरा कोई आ ही नहीं सकता। पूर्व के संबंध वाले ही आए हैं। एक बार उनके लड़के रूपित ने बहनों को कुछ चेक जैसा काग़ज़ पकड़ाया। मेरे साथ वो लिफ्ट में आ रहा था, तो मैंने पूछा–*रूपित तूने बहनों को कुछ दिया, क्या था वह?* उसने कहा–*गुरुजी, बहनों को एक चेक देना था।* मैंने मज़ाक में उसे कहा–*तू बहनों को चेक देता है, मुझे तो कभी कुछ देता ही नहीं।* वह बोला–*गुरुजी आपको कहना पड़े क्या?* आपको तो मैं मेरी चेक बुक कोरी दे जाता हूँ। तुम्हें जब चाहिए निकाला करो। देखो, इस लड़के ने माना कि यह हमारी फेमिली है और वो संस्कार कहां से आए? अनुज-अनिता में होगा, तब आया होगा न! मेरा कहना यह है कि आप जरूर समझो ये जो यहां बैठे हैं, यहाँ तक कि डॉक्टर (आर.पी. सिंह) तक पूर्व के होंगे, तब इस मंदिर में आए हैं, वैसे ही नहीं आ सकते। अब आए हैं, तो **इस मंदिर का-भगवान का सुख-शांति और आनंद लेना-नहीं लेना, वो खुद आप पर निर्भर रहेगा...**

✡✡✡

भक्ति करता छूटे मारो प्राण, योगी ऐवुं मांगू रे...

3 फरवरी 1988 में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के वरद् हस्तों दिल्ली-अशोक विहार में श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर का खात् मुहूर्त हुआ। सभी पुराने जोगी जानते हैं कि तब मंदिर के निर्माण कार्य के लिए वल्लभ विद्यानगर से गुणातीत समाज के निष्ठावान गृहस्थ सेवक **'पू. कानजीभाई'** प.पू. पप्पाजी की आज्ञा से अपना योगदान देने के लिए आए थे। अपनत्व से भरसक एवं भरोसेमंद पू. कानजीभाई की सेवा ने प.पू. गुरुजी को खूब निश्चिंत किया। आजीवन निष्कामभाव से संतों, मुक्तों, बहनों सभी की सेवा करते हुए **88 वर्षीय पू. कानजीभाई दिनाँक 26 मई** को अक्षरनिवासी हो गए।

1947 में कराची से भारत आने के बाद **गुरुहरि योगीजी महाराज** की आज्ञा से वे मुंबई कारोबार करने गए और वहाँ **प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी** के समागम से बहनों के भगवान भजने के कार्य में आत्मीयता से जुड़ गए। 1965 में वल्लभ विद्यानगर-'गुणातीत ज्योत' के भवन निर्माण के कार्य की सेवा के लिए मुंबई से आ गए।

तत्पश्चात् विद्यानगर में ही निवास स्थान बना कर, सहकुटुंब स्थायी रूप से रह कर, आजीवन गुणातीत समाज के लिए समर्पित हो गए। प.पू. पप्पाजी की आज्ञा से सांकरदा और दिल्ली मंदिर के निर्माण कार्य व ताड़देव के फ्लैट की मरम्मत की सेवा **एक कॉन्ट्रक्टर-सीविल इन्जीनियर के रूप में नहीं, परंतु दासभाव एवं आत्मीयता से** की और **सभी गुणातीत स्वरुपों की प्रसन्नता के पात्र बने।**

इससे भी अधिक, एक **बेटी पू. हर्षदा बहन, पोती पू. रीना बहन** 'गुणातीत ज्योत' में और एक **बेटा पू. रमेशभाई** 'अनुपम मिशन' में व्रतधारी युवक बनने के लिए अर्पण किया। अन्य बेटे-बहू भी सत्संगप्रधान जीवन जीते 'भगतजी के मार्ग की ओर' अग्रसर किए। निष्कामभाव से करी सेवा के फलस्वरूप समग्र तंत्र शुद्ध हुआ और सर्वोपरि निष्ठा व शुद्ध उपासना सहित 'गुणातीत ज्ञान' को पचाया।

यूँ, आजीवन भजन, भक्ति व सेवा में सराबोर रहते हुए केवल अपना जीवन ही धन्य नहीं बनाया, बल्कि अपने पूरे कुटुंब को प्रगट प्रभु से जोड़ कर मुक्ति के मार्ग पर चलना सिखा कर जीवन सार्थक कर लिया। ऐसे निष्ठावान मुक्त भले ही देहत्याग के कारण हमारे बीच नहीं रहे, परंतु उनकी सेवा-भक्ति कभी भी भुलाई नहीं जा सकती... श्रीजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूप उनके परिवारजनों को बल प्रदान करें और पू. कानजीकाका द्वारा मिली सत्संग की विरासत जीवंत रखें—ऐसी प्रार्थना।

'यह लड़का व्रतधारी भाइयों में याहोम हो गया !'

पिछले वर्ष पेरिस में हुए 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के प्रथम चरण की सभा में **पू. प्रफुल्लभाई** के लिए **संत भगवंत साहेबजी** के मुख से निकले उपरोक्त उद्गार एहसास कराते हैं कि **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के लाड़ले पुत्र ने कैसा जीवन जिया होगा कि प्रगट प्रभु के दिल में ऐसे बैठ गए!** और तो और, अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प.पू. साहेबजी ने स्टेज पर बुला कर उन्हें हार भी पहनाया था!

1 अक्तुबर, 1950 मोम्बासा में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं पू. मम्मीजी (कमलाबा) के घर पू. रमेशभाई (प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी) के अनुज के रूप में जन्म लिया। 1952 में ब्रह्मस्वरूप काकाजी को हुए साक्षात्कार की ऐरी-गैरी बातें सुन कर ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी (बाबुभाई) सहकुटुंब भारत-मुंबई, ताड़देव पधारे। परंतु, जब उन्हें गुरुहरि योगीजी महाराज में 'प्रगट प्रभु' की प्रतीति हुई, तो वे भी प.पू. काकाजी के संग सहकुटुंब उनकी अनुवृत्ति और अभिप्राय में जुड़ गए और... ताड़देव-तीर्थस्थान के आध्यात्मिक माहौल में दोनों बेटों का पालन-पोषण हुआ। प.पू. पप्पाजी की प्रार्थना के फलस्वरूप पू. रमेशभाई तो 1961 में प्रथम शिक्षित 51 युवकों में गुरुहरि योगीजी महाराज के वरद् हस्त भागवती दीक्षा प्राप्त करके **'साधु अक्षरविहारीदास'** बने और 1966 में वल्लभ विद्यानगर, गुणातीत ज्योत की स्थापना होने पर, पू. प्रफुल्लभाई पप्पाजी–मम्मीजी के संग 'प्रभुकृपा' में रहने के लिए आए।

गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति अपने पिता की पराभक्ति-समर्पण से प्रेरित होकर 21 वर्ष की आयु में उन्होंने भी भगवान भजने का निश्चय किया। 'अनुपम मिशन'-प.पू. साहेबजी की निश्रा में एक व्रतधारी साधक बनने के लिए जा रहे अपने इस पुत्र को **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी** ने ब्रह्मसूत्र दिया–

'भगवान भजने के सिवा और कुछ करने जैसा ही नहीं है...

गुणातीतभाव प्रगटाना हो तो साहेब की आज्ञा में सेवक बन कर रहना।'

और... वाकई, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के इस सूत्र को पकड़ कर साधुता की ऐसी महारत पाई कि उनके हलन-चलन से किसी को भी एहसास न हो कि वे एक 'गुणातीत विभूति के पुत्र' हैं। गुरुहरि योगीजी महाराज ने जैसे चालीस वर्ष तक रसोई की सेवा करते हुए भक्तों को प्रभु के भाव से परोसा, उसी प्रकार मानो उनका वारसा रखते हुए ब्रह्मज्योति के **'योगीप्रसाद'** में रसोई का मुखिया होने के बावजूद, एक सेवक की अदा से रहे। हर एक में स्वरूपों को निहार कर स्मित से 'प्रसाद' खिला कर अंतर में प्रभु की मूर्ति का सुख पाया। यह हुबहू दर्शन दिल्ली के मुक्तों ने मोगरी में तो अकसर किया ही, वरन् पिछले वर्ष प.पू. गुरुजी के साथ गए सेवकों-मुक्तों ने लंडन में भी किया।

प.पू. गुरुजी ने तो उन्हें छोटी आयु से देखा है। सो, जब से पू. प्रफुल्लभाई की तबियत खराब होने की खबर प.पू. गुरुजी को मिल रही थी, तब से वे उन्हीं के अनुसंधान में रहे। सो, प.पू. अश्विनभाई द्वारा उनकी अंतिम क्षणों का संदेश पाकर, तुरंत ही **प.पू. गुरुजी ने अश्रुभरे नयनों एवं गद्गद् हृदय से पू. अभिषेक**

व पू. आशिष को 7 जून की सायं फ्लाईट से जाने के लिए कह दिया, ताकि वे अंतिम दर्शन चूकें नहीं।

साधकों के लिए आदर्श समान ऐसे **पू. प्रफुल्लभाई** ने चार महीने की बीमारी उपरांत **63 वर्ष** की आयु में **8 जून** के प्रथम प्रहर, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी यानि – भगवान स्वामिनारायण के स्वधामगमन तिथि के शुभ दिन अक्षरधामगमन किया। प.पू. साहेबजी को लंडन पहुँचे अभी चार दिन ही हुए थे कि पू. प्रफुल्लभाई के देह त्याग को सुन कर वे पुनः भारत लौटे। सायं पाँच बजे ब्रह्मज्योति के **'ब्रह्मलीन स्थल'** जहाँ डेढ़ महीने पहले डॉ. संनदभाई को अंतिम विदाई दी, वहीं प.पू. साहेबजी के सान्निध्य में उनकी अंत्येष्ठि विधि हुई।

भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना कि **पू. प्रफुल्लभाई ने** जैसे हमेशा प्रफुल्लित रहते हुए अपनी साधुता, स्मित और माहात्म्ययुक्त सेवा से **संत भगवंत साहेबजी जैसी दिव्य विभूति के सीने में ठंडक कर दी, वैसे ही हम सभी, जहाँ जिस भी स्वरूप से जुड़े हैं, उन्हें अपनी ओर से ठंडक प्रदान करने की राह पर अग्रसर हों!**

❖❖

मन का 'अमन' और फिर 'समन' करके **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** का भरोसा जिसने पाया व **प.पू. स्वामिजी** ने जिसे 'हमारा आदर्श' कहा, ताड़देव के नौ योगेश्वरों में से एक ऐसे **पू. राजुभाई भट्ट** ने 18 जून की सुबह अक्षरधामगमन करके स्थूल रूप से विदाई ली! करीब पिछले सात साल से वे काफी बीमार थे। उनका हृदय 30 प्रतिशत काम कर रहा था। उन्हें अपने दैनिक कार्य करने में भी खूब तकलीफ थी। लेकिन, उनके अक्षरधामगमन निमित्त पवई में 20, 21, 22 जून – तीन दिन **'पंचयज्ञ'** पुस्तक की पारायण दौरान **पू. भरतभाई** एवं **पू. वशीभाई** ने बताया कि इतने सालों से बीमार रहते हुए उन्होंने महाराज से कभी भी प्रार्थना नहीं की कि मुझे ले जाओ या मेरी बीमारी को ठीक कर दो, न ही किसी से अपेक्षा रखी कि मेरी कोई देखभाल करे या मुझे पूछे या ऐसा कुछ। दूसरी ओर – उनके साथीमुक्त **पू. हरखचंदभाई** ने अपनी शारीरिक तकलीफ को नज़रअंदाज करके, जिस प्रीति से दिन-रात उनकी जो सेवा की, उससे मानो ब्रह्मस्वरूप काकाजी ऐसे राजी हुए कि पू. हरखचंदभाई हर प्रकार से स्वस्थ हो गए! यूं कहें कि पू. राजुभाई की परछाईं बन कर वे जिए। पू. हरखचंदभाई की ऐसी सेवा के लिए उन्हें अंतर से नमन!

करीब सन् 1960 में पू. महेन्द्र बापु द्वारा ब्राह्मण कुटुंब के पू. राजुभाई गुरुहरि योगीजी महाराज से जुड़े और उनका प.पू. महंतस्वामी से संपर्क हुआ। पू. राजुभाई के लिए सत्संग करना भी एक साधना थी। उस समय गुरुहरि योगीजी महाराज संपर्क में आने वाले हर एक युवक से पूछते – *साधु बनोगे?* सरल स्वभाव के पू. राजुभाई ने तो तुरंत 'हाँ' कर दी थी। परंतु, उनके वकील पिता ने इतने हद्द तक नाराज़गी जताई कि वे उन्हें लकड़ी से मारते भी थे। पर, अडिग पू. राजुभाई ने अपना ध्येय चूका नहीं और उनके भीतर की सच्चाई का प्रभु ने साथ भी दिया।

संस्था में विमुख प्रकरण होने पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रति लगाव के कारण पू. राजुभाई ने ताड़देव आना शुरू किया। प्रभु का होकर जीने की उनकी लगन कम न हुई और... ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने उनके पिता को सांत्वना दी कि वे उसे साधु यानि भगवे कपड़े नहीं देंगे, रंगीन कपड़े में ही भीतर से साधु बनाएँगे। यूं खूब समृद्ध कुटुंब के पू. राजुभाई ताड़देव में भगवान भजने के लिए तो आए, परंतु जैसे सोना तप कर निखरता है, इसी प्रकार अपने इस सेवक को, निखारने के लिए, ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने अलग-अलग हरिभक्तों के यहाँ रहने के लिए भेजा और बी.ए. करने की आज्ञा की। तत्पश्चात्, उनकी प्रकृति मरोड़ते हुए उनके पिता के कहने पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने उन्हें एल.एल.बी. करने के लिए कहा, जबकि उन्हें तो इन्जीनियर बनना था। लेकिन, ब्रह्मस्वरूप काकाजी में दिव्यभाव रख कर उन्होंने वह भी किया और उसे अपनी आध्यात्मिक साधना ही मान कर, **अपने मन को साथ न देते हुए, सत्पुरुष को साथ दिया-उनका वचन माना।** ऐसे कई कितने प्रसंग बने कि जहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने उन्हें उनकी प्रकृति के विरूद्ध विरोधप्रकृति वालों के साथ मिलजुल कर सेवा करने का आदेश दिया। ब्रह्मस्वरूप काकाजी की कई पुस्तकों के प्रकाशनों का कार्यभार भी उन्होंने बखूबी संभाला।

एक मूक सेवक बन कर उन्होंने ब्रह्मस्वरूप काकाजी की हर आज्ञा, चाहे मन माने या न माने, पर शिरोधार्य की। उनकी हर एक क्रिया का मर्म ढूँढ कर अपने साथीदारों, सरीखों या कई बार तो मित्रभाव से अपने से बड़ों को भी सूझ दी। प.पू. गुरुजी के स्वमुख से कई बार 'योगीचरितम्' पुस्तक का प्रसंग हम सभी ने सुना है कि किस प्रकार सखाभाव से पू. राजुभाई ने प.पू. गुरुजी को ब्रह्मस्वरूप काकाजी के कहने का तात्पर्य समझाया था और प.पू. गुरुजी की भी साधक की दृष्टि कि कोई भी बचाव करे बिना, उन्होंने पू. राजुभाई द्वारा मिली सीख का सहर्ष स्वीकार भी किया। सही अर्थ में कहें तो ऐसे प्रसंग नए साधक वर्ग के लिए दर्पण के समान हैं कि हमारे बड़े कैसा जीवन जिए हैं। आध्यात्मिक मार्ग पर आगे जाने के लिए नित्य नए प्रसंग तो बनते ही हैं। लेकिन, **अपने से बड़ों से मिली सूझ या प्रसंगों की जुगाली करते रहेंगे, तो साधना बोझरूप नहीं, सरल बनेगी और जो दिव्य जीवन जीने का मौका हमें मिला है, उसका दिव्यानंद महसूस कर पाएँगे।** पू. राजुभाई की त्रयोदशी के निमित्त **प.पू. गुरुजी** ने पवई के योगेश्वरों को अपने संदेश में लिखा भी–

पू. राजुभाई सुखी-समृद्ध कुटुंब से और बुद्धिशाली होने के बावजूद पू. अदाश्री की 'छोटे से छोटा बन कर रहे। नाने से हो नाने रहीए...' पंक्ति के अनुसार तनिक भी जताए बिना, हमारे बीच कसनी की भक्ति में निरपेक्षभाव से जी गए...

*वचनामृत वड़ताल–11 के अंतिम पैरा में **श्रीजी महाराज** ने जो कहा है–*

आत्मा–परमात्मा का साक्षात् दर्शन होने का साधन ऐसे सत्पुरुष के प्रति दृढ़ प्रीति है...

***पू. राजुभाई** में यह प्रतीत होता है। प.पू. काकाजी के प्रति उनकी कैसी छूपी प्रीति कि कैसे भी संजोगों में उन्होंने **प.पू. काकाजी में दोष न देखा**; इतना ही नहीं–**प.पू. काकाजी का वचन माना।** उनकी यह समझ–यह प्रीति काम कर गई।*

तो, ऐसे महामुक्तों के जीवन प्रसंगों को हमारे जीवन का आदर्श मान कर, प्रगट मिले सत्पुरुषों के साथ जीवन जीने का सही अर्थ समझें, वही पू. राजुभाई के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली कही जाए...

1 मार्च, 2014 सायं – प.पू. गुरुजी के 77 वें प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या

पू. किशोरभाई मास्टर्स (लंडन)

...काकाजी जब अफ्रीका जा रहे थे, तब का फोटो 'हमारा मंदिर' (पुस्तक) में देख रहा था। उस समय मैं भी अफ्रीका (मोम्बासा) में था। मैं सात साल का था। मुझे ध्यान है कि किसी के बताने पर मेरे पिताजी मुझे पोलियो होने के कारण योगीजी महाराज के पास लेकर गए थे। वहाँ बापा ने कंठी पहनाई, धब्बा मारा और मेरा पाँव पकड़ा था। कल रात को फोटो देख रहा था, तो सपने में भी मुझे वह सीन आया। मैं विचार कर रहा था कि बापा ने तो पकड़ा था, लेकिन मैं थोड़ा छटक गया था। 1980 में पप्पाजी और साहेब का दर्शन भी किया था।

शायद 1973 में, 1983 में भी काकाजी के दर्शन हो गए थे, लेकिन उनके साथ एटेचमेन्ट 1985 में हुआ। लंडन में उन्हें कल्चरल शो नहीं देखना था, लेकिन उनके मन में तीव्र इच्छा थी और गाड़ी में भी वे बात करते थे कि यदि महंतस्वामी या डॉक्टरस्वामी मिल जाएँ, तो बापा की शताब्दी कहीं भी हो हम साथ में मनाएँ– यह बात कर लूँ। अब **काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी आ रही है**; तो उस समय **जैसे काकाजी को बापा की शताब्दी के लिए झंखना थी, यूँ हमें इतनी तो होनी चाहिए कि हम सब मिलजुल कर यह शताब्दी मनाएँ।** धन्यवाद है पेरिस मंडल को कि उन्होंने यह चान्स ले लिया। सो, आज पेरिस के सभी हरिभक्त प्रवीणभाई लाड के गुणगान गा रहे हैं। गुरुजी भी पहली बार लंदन आए हैं, तो उनकी सेवा करने का मौका मिला। हम यहाँ आते थे, पर दिल्ली के भक्तों के साथ नज़दीकी से जुड़े नहीं थे। लंदन में उनके नज़दीक आए, आनंद किया... पेरिस के उत्सव के बाद **एक के बाद एक उत्सव होते रहे हैं।** तब ऐसा होता है कि महाराज भी ऐसे ही उत्सव करवाते थे **कि सभी हरिभक्त मिलजुल कर एक-दूसरे के साथ लगाव से जुड़ जाएँ, एक-दूसरे की पहचान हो। एक-दूसरे के साथ टकराते हुए स्वभाव का परिवर्तन हो।**

दिनकरभाई ने एक बार बात की थी कि महाराज के समय में एक ऐसे हरिभक्त थे जिन्हें मन में ऐसा होता था कि उत्सव में तो स्वरूपों से मिलना होता नहीं, सो अगले या उससे अगले दिन (घर) वापिस लौट जाऊँगा। वे जब उत्सव के बाद महाराज के दर्शन करने के लिए गए, तो महाराज ने उनसे कहा जो-जो हरिभक्त उत्सव में आए हैं। पहले उनके दर्शन करके आओ, फिर यहाँ आना। उत्सव तो कई आने वाले हैं। पर, जैसे हरिप्रसादस्वामिजी कहते हैं कि *आत्मीयता - 'दास का दास होकर रहो।'* काकाजी कहते– *'भुलकुं - मैत्रीभाव!'* यह सब हमारे लिए है। यहाँ **हमें हमारी एटीट्यूड बदलने की जरूरत है... वही हमारा रूपांतर करेगी।**

...बापा का धब्बा खाया था और पूर्व जन्म का ऐसा कोई पुण्य होगा कि अश्विनभाई पोपट 1983 में साहेब को मेरे घर पधरामनी के लिए लेकर आए और **साहेब ने आशीर्वाद दिया कि *'सत्पुरुष का जोग हो, वही योग!'*** फिर साहेब के कहने पर मैं मिशन में गया। **बस, उस संबंध के कारण मुझे काकाजी का जोग**

हुआ। काकाजी मिले, उनके आशीर्वाद से सर्वदेशीयता मुझ में आई। फिर दिनकरभाई ने मुझे अमेरिका बुलाया। उसके बाद इंडिया आना हुआ और मुंबई में काकाजी का अमृत पर्व मनाया और सभी केन्द्रों में गया। फिर हर साल यहाँ आना शुरू हुआ, अनुभव होने लगे।

बाहर की दुनिया में सारे चमत्कार दिखाते हैं, तो वे हम मानते हैं। अपने गुणातीत समाज में भीतर से जो मिरेकल होता है, वह बहुत कम दिखाई देता है। हमारे नेचर के अंदर ट्रान्स्फॉर्मेशन होता है। हमारी आउटलुक डिफरन्ट होती जाती है। हमारे व्यवहार के साथ आध्यात्मिक प्रगति होती जाती है, पर हमें दिखाई नहीं देता... बड़े पुरुष हमारे साथ हैं। हमारी इस जिंदगी की तो रक्षा करते ही हैं, पर देह छोड़ेंगे तब भी हमारे साथ ही होंगे...

पू. देवेश शर्माजी (दिल्ली)

मंदिर से जुड़े हुए अभी मुझे कम समय हुआ है। लेकिन, जैसा कि गुरुजी हर प्रसंग पर हमें बताते हैं कि यहां पर आने वाले जितने भी हैं, वे आज से नहीं जुड़े हैं; वो एक कन्टीन्यूएशन है। जितने भी लोगों-जनों की यहां आवाजाही रहती है, वे पूर्व के संबंध वाले हैं। मैं अपना एक्सपीरियन्स ऐसे बता सकता हूँ कि मुझे आए हुए अभी एक साल जरूर हुआ है, पर जिनसे भी मिलता हूँ, तो ऐसा लगता है कि कई जन्मों से जुड़े हुए हैं। जब हम यहाँ आए तो हमें एक ही बात समझाई गई– *'आप यहां आए हो न ? बस इतना ही काफ़ी है, अब आप बेफिक्र हो जाइए।'* जब मैं पहली बार यहां आया, तो यह देखकर एक अचंभे में था कि यहां यह पॉसीबल है क्या ? यहां जो समाज गुरुजी ने क्रियेट किया है, यहाँ जो चला आ रहा है, वह इतना संपूर्ण और सर्वगुण है कि गुरुजी से मिलने के बाद मुझे उससे मैच होने के लिए छः महीने लगे। पहले मैं सात बजे से क्लब जाता था, उस आदत को छोड़ते-छोड़ते अब सात बजे के बाद मंदिर आने लग गया। अब जब मंदिर आने लग गया, तो क्लब में जो बैठते थे वे पूछते थे– *कहाँ जा रहा है ?* मैं कहता– *बहुत जरूरी काम है।* पर, उन्हें शक था ही कि किसी और जगह जाने लगा होगा। यहां आने के बाद मोबाइल साइलंट करके फोन अटेंड नहीं करता था, तो उन्हें पक्का हो गया कि कहीं कुछ गड़बड़ है। लगता है कहीं कुछ तगड़ी स्कीम लगा रहा है; कोई बड़ी स्कीम होगी, जहाँ से अच्छा पैसा कमाएगा। महीने-दो महीने के बाद मैंने अपने एक फ्रेंड को बताया कि मैं ऐसे-ऐसे मंदिर जाता हूँ। वह बोला– *मंदिर तो तू पहले भी जाता था। लेकिन ऐसा क्या तू जुड़ गया, सब ठीक-ठाक है न ?* मैंने कहा– *सब ठीक है।* मगर **जो सुख-शांति यहां पर आने के बाद मिली है, वह कम्प्लीट-संपूर्ण है।** किसी भी प्रॉब्लम के बारे में यहां आते समय सोचता हुआ आता था और गुरुजी के पास आकर बैठता, वे पूछते कि *सब ठीक है ?* वाकई, जब यहां से निकल कर जाता, तो सब ठीक हो जाता था। गुरुजी की जो महिमा है वो प्रगट है, साक्षात् प्रगट है। मैं बचपन से पूजा तो करता आ रहा हूँ। शुरू से भगवान में अच्छी आस्था रही है। कोई भी चीज होती थी, लोग कहते थे कि पत्थर की मूर्ति है। क्या वहां जाकर बैठ जाता है। मैंने कहा **अपनी मूर्ति सुनती है। बट, यहां जो मूर्ति बैठी है, वो सुनती भी है और बोलती भी है। मेरे लिए यह बहुत बड़ा**

चमत्कार है। मैं अपने क्लोज़ सर्कल में यह कहता भी जरूर हूँ। मगर अंदर से इच्छा रहती है कि वो लोग यहां न आएँ, क्योंकि ऐसा कोई आ जाएगा, तो मुझे वापिस वहीं पर ले जाएगा।

गुणातीत समाज के बारे में मैंने ज़्यादा पढ़ा नहीं, लेकिन यहाँ पर जो संस्कार मिलते हैं और गुरुजी से जो प्रसंग सुनते हैं, शिक्षापत्री, वचनामृत में जो-जो चीजें लिखी हुई हैं, धे ऑल आर पर्फेक्ट–जैसे कि बाप-बेटे के अंदर भी आपस में लिखित में कारोबार होना चाहिए। यह सब मेरे साथ हुआ है। मैं बिजनेस चलाता हूँ और ज़्यादातर वर्बल कमिटमेंट पर ही काम करता था। लास्ट 10 इयर्स में जितनी भी वर्बल कमिटमेंट पर बिजनेस किया था, उन सब में प्रॉब्लेम आई। उसे सॉल्व करने के लिए एक्स्ट्रा पावर लगानी पड़ती थी। जो गुरुजी बताते हैं, उसे मैंने लास्ट वन इयर में इम्प्लीमेंट किया। बहुत ड्रास्टिक चेन्ज है। पहले मैं 100 परसेंट काम करता था, अब 10 परसेंट ही काम करता हूँ। क्योंकि 90 परसेंट चोर भाग जाते हैं। तो, मैंने यहां आने के बाद यह बात परमेनन्ट्ली एडॉप्ट कर ली कि कोई भी काम करना हो, तो उसे लिखित में करना चाहिए।

...इस गेट के अंदर आने के बाद हम में एक नॅचरल चेइन्ज आ जाता है और वो गुरुजी का क्रियेटिव और साईलंट चेइन्ज है... हमें अपने आपको और रिफाइन करना चाहिए। हम एक-दूसरे की कमियां बहुत ढूंढते हैं। मुझे कई बार लोग कहते हैं कि आप जो भी कुछ देखते हो, उसमें कमी ढूंढने लगते हो। मैंने कहा–*आई विल ट्राई टु इम्प्रूव माईसेल्फ।* मैं कोशिश करके अपने आपको इम्प्रूव करूंगा। **गुरुजी के संसर्ग-मार्गदर्शन से हमें जो एक एक्स्ट्रा बेनीफिट मिला है, वो 'हमारा' शब्द से मिला है। आज से कुछ दिन पहले तक मैं 'मेरे गुरुजी' कहता था। अब हो गया–'हमारे गुरुजी' और वो हमारापन धीरे-धीरे डेवलप हो रहा है।** भरतभाई, वशीभाई, दिनकरभाई हमें बात बहुत अच्छी तरह से एक चीज बता रहे हैं कि अगर हम परिवार की तरह हमारे दायरे में चलेंगे तो लंबा चलेंगे, तरक्की होगी और हम एक-दूसरे के दुःख-सुख समझ सकेंगे, बाँट पाएँगे और परेशानियाँ सॉल्व हो सकती हैं।

साल भर में गुरुजी सबके साथ पेरिस गए, मसूरी गए और बीच में और भी एक जगह गए। **मैं पंद्रह साल में चार दिन लगातार दिल्ली से बाहर कहीं नहीं रहा। मुझे ऐसा रहता कि कोई मेरा पैसा उठा कर ले जाएगा।** फर्स्ट टाइम हिम्मत करके मैं गुरुजी के साथ मुंबई गया। मैंने सोचा कि दो दिन बाद गुरुजी को पटा कर वापिस आ जाऊंगा। दो दिन बाद मैंने गुरुजी को एप्रोच भी की कि गुरुजी, सांकरदा जाना जरूरी है क्या? जब स्वामिजी यहां आ रहे हैं। पर थोड़े टाइम बाद मुझे ही ऐसा लगा कि नहीं, मुझे खुद समझना चाहिए कि जब भगवान के काम से निकले हैं, तो कौन मेरा पैसा उठा कर ले जाएगा? आने के बाद उल्टा डबल हो गया। बोम्बे में हम लोग विनोदभाई के घर पर थे। दो दिन बाद मैंने उनके सामने हाथ जोड़े और कहा एक तो आप इतना सुबह-सुबह उठा मत करो। सुबह जल्दी उठने की मेरी आदत नहीं है। ये तो धुन की वजह से उठना पड़ता है। बाइ चांस सुबह छः बजे से ही आंख खुल जाती थी, क्योंकि धुन शुरू हो जाती थी। पर, धुन शुरू होती है, तब मेरी नींद शुरू होती है। जयश्री भाभी और विनोदजी जिन्दगी में पहली बार मिले, लेकिन उनका व्यवहार ऐसा था कि मानो हम उनसे सालों से मिल रहे हैं। घर उनका, एपार्टमेंट उनका, पर वे दूसरों के घर

में रह रहे थे और हम उनके फ्लैट में! मैंने गुरुजी से कहा कि मैं तो ऐसा नहीं कर सकता। मैं आपको होटल खरीद कर दे सकता हूँ, मगर यह चीज नहीं कर सकता। वे हमारे साथ ही बारह-साढ़े बारह बजे तक सोते, पर हम से पहले उठकर नहा-धोकर नाश्ता भी तैयार रखते थे। एक तरह का नहीं, पांच-पांच छः-छः तरह का। मैंने कहा आप लोग यह कब बंद करेंगे? मैंने कहा अभी हमें मंदिर जाना है और फिर भरतभाई के पास जाकर भी प्रसाद लेना है। ऐसी भावना उस परिवार की देखी, तो मन में थोड़ा और बदलाव आया। तीन दिन बाद हम लोग बॉम्बे से सांकरदा के लिए निकले। ट्रेन में फर्स्ट ए.सी. के डिब्बे का सफ़र ऐसा था कि वो रात मुझे पूरी जिंदगी याद रहेगी। छोड़ने के लिए इतने सारे हरिभक्त स्टेशन पर आए हुए थे कि अगर टेक्स लगा दें, तो रेलवे को बहुत ज़्यादा कमाई हो जाए। **सब अपने मन से जुड़कर मिल रहे थे!**

...सांकरदा गए, तो वहाँ एक नई चीज देखी। स्वामिजी ने वहां पर जो प्रबंध कर रखा था वो और भी अद्भुत था... **सांकरदा में जो समैया हुआ वो और भी अद्भुत था।** शक्कर तुला! **सोना और चांदी से तुलना तो देखा था; सिक्कों से भी तुलते हैं, बट शक्कर तुला का माहात्म्य मुझे जो समझ में आया और जो स्वामिजी ने किया वो सोना और चांदी के तोलने से भी ऊपर है। वो शक्कर हरिभक्तों के पास जाएगी, हरिभक्तों के शरीर में लगेगी! आदमी सोना-चांदी खा नहीं सकता। वो डवलप्मेंट नहीं आ सकती।** मैं तो सोच रहा था कि इन्होंने शक्कर ही का चयन क्यों किया, इन्हें कोई और आइटम ही नहीं मिली होगी। फिर उसका एक और फॅक्टर भी है, कहते हैं भगवान कृष्ण मक्खन, मिश्री, दही चोर थे। **एक खोज है कि पॉज़ीटीविटी के लिए, शुगर ऑलवेज़ कन्टेईन पॉज़ीटीविटी।**

वहां से दिल्ली के लिए रवाना हुए। फ्लाइट में बैठे हुए थे तो गुरुजी ने कहा कि थक गए होंगे? तो मैंने कहा कि नहीं, थकान वगैरह सब फर्स्ट क्लास है, एकदम फ्रेश हूँ। तो बोले अमदावाद जाना है, पर गर्मियों में जाना बड़ा मुश्किल हो जाएगा। मैंने कहा इवन एवरी फ्राइडे, सॅटरडे, सण्डे वी कॅन गो आउट, कहीं पर, जब आपका मन करे। तो बोले 14 तारीख को जाएँगे और हम अमदावाद... वहां भी ऐसा लगा कि अपने ही घर में रह रहे हैं। जो घर वाले हैं वे बाहर रह रहे हैं, जो बाहर वाले हैं वे घर में रह रहे हैं। ये सारी नॅचरल घटनाएँ हैं। ये सारी चीजें एक परिवार, एक कुटुंब की है। पहले तो यह सिर्फ कहानियों में सुनते थे। यहां आ करके यह जीता-जागता मिला है। गुरुजी जो बात हमें गाइड करते हैं, बहुत स्ट्रेट होती है। हम जब इन्हें पूछते हैं कि ये कैसे आपकी नॉलेज में आई है? तो बताते हैं कि हमारी शिक्षापत्री या वचनामृत इन सबमें यह लिखा हुआ है। महाराज की सोच कितनी एड्वांस्ड थी?

रिफाइनमेंट आफ लाइफ इज़ मस्ट। कहते हैं **दुनिया में हर एक चीज खरीदी जा सकती है, सुख और अपनापन नहीं खरीदा जा सकता है।** दो दिन पहले दिनकरभाई ने 'अपना घर' की ओपनिंग की। जब उसकी नींव रखी गई थी, तो मैं खुद सोचता था कि यह इतना जल्दी कैसे हो सकता है? पर, गुरुजी चाह रहे हैं, तो 100 परसेन्ट फास्ट कम्प्लीट होगा और वन ऑफ बेस्ट होगा। गुरुजी ने हर अलग-अलग युनिट–चाहे वो आशीषभाई हों, मिलनभाई हों, चेतन हो, अनिलजी हों, शैलेषभाई हों–जितने लोग हैं, उन सब

में महाराज प्रगट कर दिए। कोई नहीं मान सकता कि पांच महीने में इतने आंधी-तूफ़ान, बारिश के बीच में वह कम्पलीट हुआ! मैं ख़ुद कन्स्ट्रक्शन लाइन से जुड़ा हुआ हूँ। मेरे काफी फ्रेन्ड्स ने मुझसे कहा था कि इम्पॉसीबल है। गुरुजी ने इसका स्ट्रक्चर ऐसा बनवाया है कि इस पर 10 मंजिल और डल सकती है। मैं मानता हूँ–गुरुजी की हर एक सोच-वर्किंग महाराज द्वारा प्रेरित है। हर किसी के अंदर एक शक्ति थी। हर किसी में काम करने के लिए एक जुनून था। कोई किसी से ज़्यादा बातचीत नहीं करता था। थोड़ी बहुत डिस्कशन होती थी और काम ही काम और छः स्तंभ तो हमारे ऐसे हैं, उनका तो कोई मुक़ाबला ही नहीं है। आशीषभाई, मिलनभाई, अनिलजी, चेतन और हमारे शैलेषभाई एवं प्रिंस…

पू. डॉ. दिव्यांग (दिल्ली)

…गुरुजी–इन धी शॉर्ट स्पेन ऑफ माइ लाइफ, आपके साथ बिताए हुए टाइम को ऑन पेपर लिखना बड़ा मुश्किल है। कुछ बातें होती हैं, जिन्हें आप बोल सकते हैं-दिखा सकते हैं। धॅर आर, जो आप दिखा नहीं सकते हैं। आज काकाजी के बारे में जो-जो सुना है, वह गुरुजी के मुख से सुना है, हिज़ कॉन्ट्रीब्युशन इज़ अनमेज़रेबल इन एवरी वन्स लाइफ। उनका कॉन्ट्रीब्युशन ऐसे दिख नहीं सकता कि इस मंदिर के आगे उनका नाम लिखा हुआ है या फलां मंदिर के आगे उनका नाम लिखा हुआ है। रेवरेन्स से सब लेते हैं, वो बात अलग है।

नुसरुत फते अली खान की कव्वाली पर हमने एक भजन बनाया था। उसमें एक लाइन आती है कि आपके बारे में किसी ने बात करने को कहा, तो जो बात कहनी थी, वो तो कह न सके और जो छुपानी थी वो बताने लगे। ऐसे मेरे साथ के इन्सीडेंसिज़ हैं। लास्ट इयर पेरिस गए थे। पेरिस में सब अच्छा था। सिटी भी अच्छी है, समैया भी बहुत अच्छा था, लेकिन सबसे अच्छा टाइम जो मुझे लगता था कि मैं जो अकेला आपके साथ स्पेंड करता था; भले ही आप कुछ नहीं बोलते थे। आप रात को सो रहे होते थे, सुबह काढ़ा पी रहे होते थे। वो सबसे अच्छा टाइम था मेरी लाइफ का। व्हेन आई केइम बॅक, तो मुझे लगा कि फुलफिल ट्रीप था। सिर्फ इसलिए कि आपको देखने का मौका मिलता था। ऐसे ही मैं यू.एस. गया था, तो सारे टाइम में सबसे ज़्यादा मोमेंट्स मुझे याद हैं वो यह कि जब दिनकर अंकल सुबह उठते थे, तो उठते ही सबसे पहले कहते– हे महाराज! पहला वर्ड यह निकलता है, मुझे वो चीज याद है। समैया में बहुत ब्युटीफुल बातें होती हैं, अच्छी-अच्छी बातें होती हैं। याद रखने की कोशिश करते हैं, लेकिन मुझे सिर्फ ऐसी विभूतियों की स्मृतियाँ ही याद रह जाती हैं।

एक बार आपके साथ अमदाबाद या कहीं दोपहर के समय ट्रेन में ट्रवेल कर रहा था। छोटा था, तो पैर दबाने की सेवा नहीं देते थे। तो मुझे वो दिन याद है कि आप (गुरुजी) सो रहे थे और चलती ट्रेन में आपके ऊपर हल्की-हल्की लाइट पड़ती जाती थी, वो मोमेंट्स मुझे याद हैं। मैंने आपको 103 में देखा है, जब आप एक कमरे में बैठते थे और यहां पर भी देखा है, जब यह सब सीमेंटेड था और अब भी देखते हैं, जहां पर इतना बड़ा

बन गया, पीछे भी इतना बड़ा बन गया। लेकिन सम हाऊ, मुझे पर्सनली ऐसा लगता है कि वर्डली चीजें सबको मिलती रहेंगी। **आज मैं आपको तोलने की कोशिश करूं कि आपके पास आया तो मेरा फलां काम बन गया, आपके पास मैंने महाराज देखे, धुन की और फलां काम बन गया। उस चीज से आपको तोला नहीं जा सकता।** फिर भी, आप सबकी वर्ल्डली चीजों में इन्ट्रेस्ट लेते हो; आज जैसे विपिन की शादी हुई, तो उसके कार्ड भी कैसे छपने हैं, उसके लिए भी आप लगे हुए थे। आज निश्चय का एडमीशन होता है, तो वह कौन-सी कॉलेज में जाएगा, कौन-से कोर्स में जाएगा, कैसे जाएगा? मालव का एडमीशन कैसे-कहाँ कराना है? **एवरी सिंगल आस्पेक्ट ऑफ एवरीवन्स लाइफ! हर किसी को लगेगा कि मेरी लाइफ को नॉट जस्ट टच किया है, बट ही हॅज़ टेइकन कंट्रोल।** लेकिन फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि इवेंच्युअली लाइफ में क्या याद रहेगा? आज मैं सोचता हूँ कि कई दिनों से-अरे! सालों से कोशिश कर रहा हूँ लेकिन मुझे लगता है कि आज अगर मेरा एडमिशन हो जाता है या कहीं मैं लग जाता हूँ, तो क्या मेरी लाइफ आज से बदल जाएगी या मुझे क्या कभी यह याद रहेगा? जैसे राकेश अंकल ने बताया कि पिछले जन्म में मैं अमेरिका में था। तो मुझे तो अमेरिका का कुछ याद नहीं है... उस चक्कर में मुझे ऐसा लगता है कि आपके प्रति की हमारी नज़र थोड़ी डायवर्ट हो जाती है। जैसे जीसस थे, आज जीसस को कोई ऐसे याद नहीं करता कि कितने कोढ़ियों को ठीक कर दिया या कितने ब्लाइंड लोगों को उन्होंने आंखें दी। श्री कृष्ण के प्रसंग आप भी बताते हैं कि गोपियों ने 60 साल तक कृष्ण का इंतजार किया कि मिलेंगे-मिलेंगे। उन्होंने क्या मांगा? श्री कृष्ण ने भी उन्हें कुछ बना कर नहीं दिया। बड़े-बड़े मंदिर भी नहीं बनाए, 16,000 रानियों की तरह भी नहीं रखा। राम आए, सोचा जाए तो बड़ी हैरानी होती है कि कई लोगों को उन्होंने टच किया होगा। वनवास दौरान भी कई कितने लोग उनसे मिले होंगे, लेकिन उनमें से एक बंदर ने पहचाना, जिसकी आज लोग पूजा करते हैं... तो मुझे लगता है कि पर्सनली आपको उस नज़र से देखना बहुत जरूरी है। **अब आपको वर्ल्डली तरीके से नहीं देखें,** क्योंकि वैसे देखते रहेंगे, यह सब करने वाले आप तो चले जाओगे। मुझे आपका एक इन्सीडेंस याद है। जैसे अमदावाद के म्युज़ीयम की बात चल रही थी और एक दिन वहां की सी.डी. आपके साथ देख रहे थे। वहां नरनारायण देव का टेम्पल सद्‌गुरु आनंदानंदस्वामी का बनाया हुआ है। मैंने उस बारे आपसे कुछ पूछा, तो आप एकदम से बोले कि *छोड़ न यार, अब 'दिल्ली' ही है मेरा। मेरा अमदावाद नहीं है, मेरा दिल्ली है...* आज से 200 साल पहले आपके ही बनाए मंदिर को आज आप बोल देते हो कि मेरा नहीं है, वैसे ही आज से 50 साल बाद आप दिल्ली मंदिर के लिए भी कह दोगे कि 'दिल्ली मंदिर' मेरा नहीं है; क्योंकि आप कहीं और जाने वाले ही हो, आप ये बॉडी छोड़ने वाले ही हो। कहीं और जाकर वहां के मुक्तों को आनंद कराने वाले ही हो। तो, तब इस चीज़ का क्या मायने रहेगा कि यह मंदिर बना था कि यह इंस्टीट्यूशन बना था? **हम यहाँ किसी सेवा में जुड़ जाते हैं, बिल्डिंग बनाने में लग जाते हैं और वो भी अच्छा बनाने में। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि हमें अपने आपसे पूछना चाहिए कि इस सेवा से गुरुजी के साथ मेरा रिलेशनशिप कितना दृढ़ हुआ? अगर वो चीज नहीं बनी, उसमें कोई तरक्की नहीं हुई, तो इट इज़ कम्प्लीट वेस्ट ऑफ**

टाइम... जैसे मैं अपने आपसे पूछूं कि मेरा पेरिस का ट्रिप कैसा गया? फिर... उसे उस तरह से मेज़र करने का फायदा है?

...इस मामले में मुझे दीदी का एक्ज़ाम्पल बहुत अच्छा लगता है या अभिषेक भैया भी हैं। **आज तक मैंने नहीं देखा कि अभिषेक भैया स्पेश्यली किसी के पास जाकर या साथ बैठ कर अपना पर्सनल रिलेशन बनाने की कोशिश करते होंगे। दीदी को भी मैंने कभी नहीं देखा कि अपना रिलेशन बनाने की कोशिश करती हों। इन्होंने आपको आगे रखा है, तो आटोमेटिकली धे आर लव्ड बाय एव्री वन-हर किसी के प्यारे हैं।** हर किसी का मन करता है कि मैं अभिषेक भैया जैसा बनूं। हर किसी का मन करता है कि मैं दीदी जैसा बनूं। **दीदी की लाइफ में तो इतनी हार्डशिप, जो किसी लेडी में नहीं देखी होगी। चाहे वो सोशियल हो या फिज़ीकल हो–हर तरह की हार्डशिप। उनकी लाइफ से मैं प्रेरणा ले सकता हूँ–स्ट्रेन्थ ले सकता हूँ...**

थोड़े समय पहले एक मूवी 'वक्त' आई थी। उसमें अमिताभ बच्चन को कैंसर हो जाता है और उसे बताते हैं कि तेरे पास छः महीने हैं। उसका लड़का बिल्कुल बिगड़ा हुआ होता है। उसे अपने बाप के ऊपर डीपॅन्ड रहने की आदत बनी थी। अमिताभ बच्चन अपने लड़के को कुछ भी बताए बिना घर से बाहर निकाल देता है कि अब तू खुद कमा खा। थ्रू आउट मूवी, वो बताता नहीं है कि मुझे कैंसर है। लास्ट में वो लड़का जब सॅल्फ सफीशियंट हो जाता है तब उसे पता लगता है कि मेरे फाधर मेरे लिए क्या करके गए हैं। यह बात मुझे आपके लिए ऐसी लगती है। जो भी आता है, आप उसे कहते हैं–धुन करो। किस लेवल का प्यार होगा आपका उससे कि बिफोर आई गो, यह व्यक्ति सॅल्फ सफीशियंट हो जाए ऐसा तैयार करते हो। क्योंकि जब काकाजी गए थे, आप सॅल्फ सफीशियंट थे। उस टाइम की बात मैंने सुनी है, ड्रामा में देखी है। दिनकर अंकल को भी ड्रामे में देखा था कि कैसे हाथ से फोन छूट गया था, लेकिन वे सेल्फ सफीशियंट थे... वो चीज अब आप बहुत कराने लगे हो।

मैं अपने आपको लक्की भी मानता हूँ और आज मैं अपने पेरेंट्स को भी देखता हूँ तो मुझे खुशी होती है कि काकाजी ने मुझे सच में ऐसी फॅमिली में रखा है कि जिन्हें प्रॉयरिटी हमेशा गुरुजी की है...

पू. विपिन यादव (दिल्ली)

1996 एण्ड में मैं पहली बार मंदिर आया था। तब 9 या 10 साल का था और 1997 में गुरुजी का सिक्सटीएथ बर्थडे सेलिब्रेशन था। उसके बाद सॅटेर डे की सभा में मंदिर आते थे। छोटा था, सो गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' करके खेलने चला जाता था और वहीं से घर चला जाता था। मुझे बचपन से नाचने का बहुत शौक था। मैं कहीं पर भी जाता, गांव या अपनी नानी के घर पर भी अगर किसी की शादी हो रही है या कुछ भी तो मैं नाचने लग जाता था। अन्नकूट के दिन शाम को भंगड़ा, रास-गरबा इत्यादि होता था। तो, 1998 के अन्नकूट पर मुझे फर्स्ट टाईम नाचने का मौका मिल गया और फिर मंदिर रुकना शुरू हुआ। एक बात मुझे आज भी याद है कि गुरुजी उस रात को सोने से पहले जब वॉशरुम जा रहे थे, तो मुझे पूछने लगे कि तू नाचता

कैसे है? कैसे ठुमके लगाता है? और... लिटरली गुरुजी ने एक हाथ उठाया और हल्के से हिले। फिर बोले कि तेरे जैसा मैं भी नाच सकता हूँ। तो **मुझे अंदर ऐसा हुआ कि हाँ, कोई धाकड़ चीज मिली है और उस दिन से वो धाकड़ चीज 'मेरी धड़कन' बन गई!** वो चीज आज भी याद है और कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। ऐसे करते-करते मंदिर आने लगा। फिर एक बार अभिषेक भइया बीमार हो गए थे। वो दो महीने के लिए मेरा लक था कि मैं और रुपित गुरुजी की सेवा में रहे थे। तब गुरुजी ने हमें नाम भी दिया– इनवर्टर और जनरेटर, मतलब मेइन लाइन खराब हो गई है, तो इनवर्टर और जनरेटर आए हैं। ऐसी कई स्मृतियाँ हैं कि मंदिर में एक बार जब मैं नाच रहा था, तो स्पेश्यली मुझे अपने पास बुलाकर, मेरे गाल खींच कर मेरे साथ एक फोटो खिंचवाई थी और तब कहा था कि यहां नाचते हैं वो सब ठीक है, पर अब जगत में मत नाचना... धीरे-धीरे वाकई ऐसा हो गया कि अब मैं कहीं भी बाहर जाऊं और मुझे कोई कहे कि नाचो, तो नाचने के लिए मन ही नहीं करता। रिलेटिव्ज़ वगैरह कहते हैं पहले तो तू खूब नाचता था और अब भाव खाता है। मैं कहता हूँ कि नाचने का मन ही नहीं करता और यहां मंदिर में नाचता हूँ, तो बस ऐसा होता है कि नाचते रहो। सोचो मत कि कोई देख रहा होगा, क्या कह रहा होगा, बस आराम से नाचो।

वैसे ही शुरू से पढ़ाई में मैं बहुत जोरदार था, ऊपर से पायलेट की ट्रेनिंग के लिए न्यूज़ीलैन्ड जाना हुआ। दिल्ली से बाहर मैं कभी अकेला गया नहीं था और मेरे ख्याल से टेन्थ के बाद फेमिली के साथ भी मैं बाहर कभी गया ही नहीं। पापा की गवर्न्मेंट जॉब है। सो जब भी गया, तो गुरुजी के साथ गया। एक आदत बन गई थी कि दिल्ली से बाहर गुरुजी के साथ ही जाना है। अब न्यूज़ीलैण्ड जाने का हुआ, तो वहाँ कोई जान-पहचान का नहीं था, कोई बॅक-ग्राउण्ड नहीं था। न्यूज़ीलैण्ड में अकेला था, तो मुझे बड़ी घबराहट हुई कि कैसे होगा? क्या होगा? सबसे पहले तो वेजीटेरियन खाना बनाने की दिक्कत। खाना बनाना आता नहीं। 'राम नाम' लेकर छलांग तो मार दी, अब होगा कैसे?

मैं वहां जाकर एकदम अकेला पड़ गया। फिर 21 जनवरी से क्लासीस शुरू हुई, तो उसमें भी यह हुआ कि इन्स्ट्रक्टर ने पहले दिन ही सब्जेक्ट पूरा खत्म करा दिया। दोपहर तक धड़ाधड़ एक बुक खत्म करा दी और ब्रेक के बाद कहा कि अब इसके बाद प्रोग्रेस टेस्ट होगा। मेरे अंदर हलचल मच गई कि यह सब करना मेरे बस का नहीं है। अपना काम नहीं है, दिल्ली वापिस चलते हैं और वही सबसे बढ़िया है। मुझे पढ़ने की बिल्कुल भी आदत नहीं। मैंने अपने पेरेन्ट्स को रो-रोकर बात की कि मुझे दिल्ली आना है, मेरे बस का नहीं है, मैं नहीं करूंगा अब। पर, एक बात मैंने कही थी कि गुरुजी को मत बताना। मैं वहां आकर गुरुजी से बात कर लूंगा। अभी बात कराओगे या गुरुजी को बोल दोगे और अगर उन्होंने बोल दिया, तो रुकना पड़ जाएगा।

एक बात यह थी कि **गुरुजी बोलें वो करना है।** मन में यह भी था कि गुरुजी से बात हो और वे कह दें कि हाँ बेटा, तू आ जा। घर वाले गुरुजी के पास आए और सारी बातें हुईं। फिर बंसरी दीदी, गार्गी दीदी मुझे कनविन्स करने लग गए, जबकि मैंने फ्लाइंग कैम्प के ट्रस्टी से सारी बात कर ली थी कि मैं ऐसे-ऐसे छोड़ दूँगा। मेरे पास ओपन टिकिट थी, सो सब हो जाने वाला था। मेरा माइंड ऐसा सेट हो गया था कि बेटा, अब तू

जल्द से जल्द निकल जा, इससे पहले कि गुरुजी की तरफ से ऐसी बात आए कि तू यह कोर्स कर ले। यूँ मैंने मन से अपनी पूरी तैयारी कर ली थी। फिर भी मम्मी-पापा, बंसरी दीदी, गार्गी दीदी ने समझाया कि बेटा गया है तो कर ले, सबने समझाया। कुदरती उस दिन **मल्कानी साहब** भी मंदिर में बैठे थे, तो उन्होंने भी टेलीफोन ले लिया और कहने लगे कि अगर आप ऐसे आ जाओगे, तो मेरे को भी बुरा लगेगा। तेजस का भी फोन बॉम्बे से आया था कि विपिन यह बहुत अच्छी चीज है। पर, मैंने मन में सोच रखा था कि पैसा ही कमाना है, दिल्ली जाकर कमा लेंगे, बिज़नेस कर लेंगे। मंदिर की सेवा करनी है, वहां जाकर कर लेंगे। अंकल से बात होते-होते मैंने उनसे कहा कि गुरुजी से बात हो पाएगी? अंकल ने कहा – *हाँ।* मैं अपने अंदर यह प्रार्थना कर रहा था कि गुरुजी बोल दें कि तू अब आ जा। गुरुजी ने फोन लिया तो वे बोले– *तेरा क्या मन है?* मैं कहा : *गुरुजी ऐसी-ऐसी बात है, फिर भी आप जैसा कहोगे वैसा कर लूँगा।* तो गुरुजी ने बोला कि *अच्छा मैं बताता हूँ।* मैंने सोचा कि पहले ही जवाब दे देते, अब इतनी देर और वेइट करनी पड़ेगी। अंदर घबराहट हो रही थी। मेरे फ्रेण्डस वगैरह साथ में थे, उन्हें भी दु:ख हो रहा था कि यह चला जाएगा। थोड़ी देर बाद अभिषेक भइया का फोन आया कि गुरुजी बात करेंगे। मैंने कहा : *हाँजी, गुरुजी!* गुरुजी बोले – *तू सोच, तू प्लेन चला रहा होगा और मैं पीछे बैठूंगा!* मेरे मन में हो गया कि बेटा, अब तो रुकना ही पड़ेगा। तो फिर मैंने सोचा कि गुरुजी ने यह बोला ही है कि तू यह कोर्स कर ले, कैप्टन बन कर आ, तू मेरा कैप्टन बनेगा। तो पता नहीं, उस टाइम बोला – *हाँ गुरुजी, आप कहते हो तो मैं कर लेता हूँ* और... पढ़ाई वगैरह शुरू हुई। अब पढ़ने बैठूँ, तो मैं देखूं कि इंजीनियर पढ़ रहा है, पर मैं घूमता रहता था, मुझे घबराहट ऐसी होती थी कि पेपर कैसे होगा – ये है, वो है। मैं दूसरे को देखूं तो वो पढ़ रहा होता था, बाकी जनों को देखूं तो वो भी पढ़ रहे हैं और मैं पढ़ता नहीं था। मैं मुश्किल से एक-डेढ़ घंटा पढ़ता था, बाकी तो पूरे दिन घबराहट में ही जाता था कि पेपर कैसे पास होगा? फोन पर गुरुजी से रोज बात होती थी। तो, गुरुजी ने मुझसे कहा था – *घबराना मत, जैसे यहां हवा है वैसे ही वहाँ भी है। तो काकाजी वहां भी हैं और तेरा काम करते रहेंगे; तू धुन करना।*

मैंने सोचा ठीक है। रोज सुबह धुन भी करता था। अब पेपर के दिन आए, तो मैं देखूं कि मैं तो फर्स्ट चॅप्टर पर हूँ और दूसरे दसवें या ग्यारहवें चॅप्टर पर हैं। मुझे हुआ कि खत्म कैसे होगा, कल सुबह पेपर है। मैंने सोचा – कोई बात नहीं, पेपर देकर तो आएं। न्यूज़ीलैन्ड में प्राइवेट लाइसेंस के लिए 6 पेपर होते हैं। उसके बाद फ्लाइंग शुरू होती है, उसके बाद कमर्शियल लाइसेंस के लिए पेपर होते हैं। पी.पी.एल के हर पेपर में मेरे ख्याल से 2 घंटे से ज़्यादा मैं नहीं पढ़ा होऊंगा, फिर भी हर सब्जेक्ट में अच्छे नंबर से पास हुआ। मुझे पता है कि मैंने पढ़ाई नहीं की थी। वहाँ कुछ साउथ इंडियन लड़के थे, उन्होंने सामने से आकर मुझसे कहा कि–
धीस इज़ नॉट बिकॉज़ ऑफ यू, धीस ऑल इज़ बिकॉज़ ऑफ यॉर स्वामिनारायण, यॉर गुरुजी।
दूसरे लोग आकर ऐसा बोले, तो फिर मेरा तो सीना चौड़ा हो गया कि अपने साथ तो भगवान हैं, चलने दो। नैया पार हो गई। ऐसे करते-करते ट्रेनिंग पूरी हुई।

...थियोरी वगैरह में मेरा इन्ट्रेस्ट भी नहीं था और विश्वास भी नहीं था। पर, **गुरुजी की प्रेक्टिकल**

लाइफ से कई चीजें सीखी हैं। जैसे–'संबंध की महिमा'। भक्तों को कैसे राजी करना। गुरुजी की लाइफ में देखा है कि **किसी भी तरीके से भगवान और उनके भक्त को राजी कर लो। एक बार जो मिले, कुछ भी करके उसके मन में भगवान बसाने हैं।** तो, कई बार ऐसे भी देखते थे कि गुरुजी किसी के घर गए या आउट ऑफ दिल्ली भी गए। उसके घर के पास कोई स्वामिनारायण का मंदिर हो, वो किसी से भी जुड़ा हो तो गुरुजी बोलते कि मंदिर जाते रहना। मतलब, चाहे कहीं से भी जुड़ा हो, तो कहेंगे कि वहाँ जाते रहना। मैंने गुरुजी से पूछा भी है कि आप ऐसे क्यों नहीं बोलते कि दिल्ली आना, दिल्ली मंदिर में दर्शन करना? तब **गुरुजी ने बताया** कि **संत का काम है भगवान देना। हमें किसी भी तरह उसके मन में भगवान भरने हैं। यह नहीं कि तू इधर आ या उधर जा। हमारा काम सिर्फ भगवान देना है और कोई काम नहीं है। उसके जीवन में भगवान बस जाने चाहिए।** मुझे हुआ कि यह भी बड़ी चीज है। ऐसी कई चीजें गुरुजी के जीवन से सीखीं।

डॉक्टर उपेन्द्र दिल्ली आए। हम में से काफी जने उन्हें जानते तक नहीं थे कि डॉक्टर उपेन्द्र कौन है? सुना था कि हरिधाम से जुड़े हैं। तो **गुरुजी ने प्रेक्टिकली अपने वर्तन से दिखाया कि काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी एक हैं** व हमें डॉक्टर को किसी भी तरह राजी करना है। चाहे कोई कहीं से आए, उसे राजी करके भेजना। गुरुजी ने डॉ. उपेन्द्र के आने से पहले सबको कह दिया कि यह कर देना–वो कर देना। बस, यही भावना थी कि डॉ. उपेन्द्र यहां से राजी होकर जाएँगे, तो स्वामिजी राजी हो जाएँगे। यह बात ऐसी है कि **हम जिसे फॉलो कर रहे हैं, उनके प्रेक्टिकल में अगर नहीं देखेंगे, तो हमारे अंदर कैसे आएगा?**

ऐसे ही अभी भक्तवत्सलस्वामी आए थे। सांकरदा मंदिर में जब भरतभाई और वशीभाई का फंक्शन हुआ, तब खाना खाते हुए मेरे ख्याल से गुरुजी की उनसे बात हुई थी कि तुम्हें डेन्चर में प्रॉब्लम हो रही है, तो मैं अपने डॉक्टर से बात करता हूँ और कुछ सेट करता हूँ। उन्हें अमदावाद से उन्हें अपने साथ फ्लाइट में लेकर आए और यहाँ जिससे गुरुजी ट्रीटमेंट कराते हैं, उस डॉक्टर के पास लेकर गए। और तो और, कम से कम तीन बार खुद साथ में गए। मैं सोचूं कि साथ में कोई जोड़ ही चाहिए, तो कोई भी स्वामी और सेवक साथ में जा सकता था, पर हर बार गुरुजी गए। बस, लास्ट टाइम जब जाना हुआ तो गुरुजी को पत्रिका का काम था और उनकी तबियत भी ढीली थी, तो गुरुजी ने कहा कि मैत्रीस्वामी चले जाएँगे। तब भी गुरुजी ने कहा कि गाड़ी मेरी ही लेकर जाना। मुझे ऐसा था कि करोल बाग-पटेल नगर में जाना होता है, भीड़ का इलाका है सो छोटी गाड़ी ले जाएँ, तो वो ज़्यादा बढ़िया रहे। पर गुरुजी ने कहा कि नहीं, मेरी गाड़ी ही लेकर जाना।

यूँ **गुरुजी की लाइफ से देखा है कि कोई भी हो, चाहे वो संत हो, चाहे वो भगत मंदिर का या कहीं का भी हो, उसके मन में भगवान बसने चाहिए। उसे किसी तरह राजी करना है, फिर चाहे वो आत्मन 'लॉलीपॉप' लेने आ रहा हो या बड़े से बड़ा हो।**

ऐसे ही एक बार पुनीत अंकल किसी शादी में आगरा जा रहे थे। उस टाइम गुरुजी की 'धुन' (गाड़ी) नई-नई आई थी। मैं घर पर था और मेरे पास गुरुजी का एकदम फोन आया कि पुनीतजी को किसी शादी में

जाना है, तो तुम 'धुन' गाड़ी लेकर जाओ। मतलब कोई कैसा भी हो, चाहे वो छोटा हो या बड़ा हो, उसकी कम्फर्ट और सबसे बढ़िया चीज जो मुझे टच करती है कि व्यक्ति की लाइकिंग के मुताबिक करते हैं। आज अगर दिल्ली समाज में चार-पांच सौ-छः सौ जने भी हैं, तो इंडीवीड्युअली उससे उसकी लाइकिंग की बातें करेंगे, उसकी लाइकिंग की चीजें देते हैं। एक परिवार में चार-पाँच जने हों, हेड ऑफ धी फेमिली को चार या पाँच जनों को उनकी मरजी से खुश रखना मुश्किल होता है। ऐसी काफी सारी चीजें इम्प्रेस करती हैं।

कई सारी चीजें तो सिर के ऊपर से चली जाती हैं, उसकी बात करता हूँ। अभी हम मुंबई गए थे। 3 फरवरी की सुबह सभा शुरू होने वाली थी। तो, गुरुजी एक साइड बैठ कर वेइट कर रहे थे कि स्वरूप आ जाएँ, फिर जाएँगे। इतनी देर में पू. प्रेमस्वामिजी आए। उन्होंने देखा कि गुरुजी बैठे हुए हैं, तो शूज़ उतार कर गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' किया। गुरुजी ने एकदम गुजराती में कहा कि आपके ये जूते बड़े अच्छे हैं। प्रेमस्वामिजी ने कहा कि अगर आपको अच्छे लग रहे हैं, तो आपके नाप के मंगा देता हूँ। गुरुजी ने कहा नहीं, मैं पहनता नहीं हूँ। फिर भी लाओ तो सही, गुरुजी ने देखा कि अंदर से सॉफ्ट हैं और वो जूते वहीं रखे। प्रेमस्वामिजी अन्य संतों से मिलने पीछे चले गए। फिर गुरुजी ने मुझसे कहा कि वो जूते लाओ तो सही, देखें। मैं लेकर आया और वे थोड़े हॅवी थे, तो मुझे ऐसा था कि मैं पकड़ कर रखता हूँ, ताकि गुरुजी को भार न लगे। पर, गुरुजी ने जूते पकड़ कर कहा कि नीचे से तू छोड़ दे। फिर गुरुजी ने वो जूते उठा कर माथे से लगाए! ऐसी कई सारी चीजें हैं। वर्ना **थियोरीटिकली महिमा की बातें सुनते हैं। पर, जब तक उस चीज को फॉलो न करें, तो वो कोई विश्वास नहीं कर सकता। जितने भी यहाँ बैठे हैं, उन सब की पर्सनल लाइफ में कोई न कोई एक्सपीरियन्स हुआ होगा, तभी यहां बैठे हैं। दिल्ली जैसे शहर में जहां 'चमत्कार को नमस्कार' है, वहां ऐसे कोई बैठ ही नहीं सकता।**

जब मैंने मंदिर आना शुरू किया था, तब उसके ऊपर पत्थर वगैरह कुछ नहीं लगा हुआ था। बाहर से सीमेंट का ढांचा था। **ऐसा नहीं कि पैसे आए तो इस मंदिर की डॅवलप्मेंट या 'अपना घर' बन गया–ये सब हो गया।** मैंने नोटिस किया कि **यहां जितने हरिभक्त आए, पहले उनकी डॅवलप्मेंट हुई, उनकी डॅवलप्मेंट से ये दान आया और दान से यह डॅवलप्मेंट आज हो रही है। मतलब मंदिर खड़ा किया वो बड़ी बात नहीं है। जो आए हैं, पहले उन्हें खड़ा करा, फिर यह मंदिर खड़ा हो रहा है** और उसमें भी सबसे जोरदार चीज जो मुझे लगी कि ऐसे संत तो बहुत देखें होंगे कि जो तीर्थ यात्रा पर ले जाते हैं। ये पहले संत ऐसे देखे कि जो तीर्थ यात्रा तुम्हें तुम्हारे घर पर दिखा रहे हैं। गुरुजी ने सारे धाम यहां रख दिए कि तुम क्यों भटकते हो? हर चीज इतनी इज़िली और प्रेक्टिकली की जा रही है।

देवेश भइया वगैरह सब बात करते हैं कि आज के टाइम में पैसा कमा लेंगे, सब कुछ कमा लेंगे, पर मन में जो शांति है, वो पैसों से नहीं मिल सकती। वो चीज जो मिल गई उससे काफी सुकून है। मेरी आदत ऐसी नहीं है कि कुछ भी प्रॉब्लम है, तो मैं गुरुजी से जाकर बात करूं। पर, मंदिर में घुसता हूँ और गुरुजी के पास बैठता हूँ, तो बस दिमाग से बात उतर जाती है कि छोड़ो न। **गुरुजी ने हरेक के साथ इतना फ्रेंडली रीलेशन रखा**

है कि मैं आराम से गुरुजी के साथ एप्रोच करता हूँ। मुझे अपने आपको लगता है कि साथ में दोस्त है, उससे एप्रोच कर रहा हूँ... गुरुजी सीढ़ी उतरते हैं और हाथ पकड़ते हैं, तो उन्हें छूते ही मेरे अंदर वाइब्रेशन्स आती हैं, जो बोली नहीं जा सकती है। कई बार टेंशन में होता हूँ और यहाँ आने पर गुरुजी कहते हैं वहां चलना है, तब तो भले दिमाग में टेंशन चल रही हो, पर गुरुजी ने जैसे ही हाथ पकड़ा, ऐसा होता है कि भई बेड़ा पार हो गया... **मैं अपने आपको लक्की मानता हूँ कि मैं गुरुजी की इन चीजों को महसूस कर पाता हूँ।**

यहां पर काफी सारे यूथ बैठे हैं, तो गुरुजी से इतनी प्रार्थना है कि गुरुजी अब हम सब पर इतनी कृपा करना कि जैसे आप सबकी संबंध की महिमा रखते हुए काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी को राजी करते हैं, हम आपकी इस चीज से आपकी प्रसन्नता पा लें और जैसा आप चल रहे हैं, जैसा हमें चलाना चाह रहे हैं, वैसे हम चल पाएँ और साथ दे पाएँ इतनी प्रार्थना–सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. भरतभाई (पवई)

किशोर मास्टर्स, देवेशभाई और दिव्यांगभाई से जो बात सुनीं, उसमें लय-लीन जैसे हो गए, इतनी अच्छी बातें बताई। देवेशभाई ने बहुत अच्छा बताया कि मेरे फ्रेंड्स से नाता छूट गया और मैं उन्हें यहाँ नहीं बुलाना चाहता हूँ कि शायद वो मुझे वापिस खींच कर ले जाए। मैं तो ऐसा कहता हूँ कि आप उन्हें लाएँगे, तो वे भी आपकी तरह जाना नहीं चाहेंगे।

गुरुजी का प्रागट्य दिन बहुत-बहुत आनंद का उत्सव होता है और यहां आने का-प्रागट्य पर्व मनाने का हमेशा उत्साह रहता है और ऐसे बहुत से भक्त हैं जिन्हें ऐसा मन करता है कि प्रागट्य दिन में हमें जाना है और आनंद लेना है। **गुरुजी आनंद का स्वरूप हैं और आनंद कराते-कराते हमें बहुत कुछ देते हैं। बहुत ज्ञान देते हैं और हमारा जीवन बनाते हैं व हमें आध्यात्मिक मार्ग में आगे भी ले जाते हैं।** अभी उत्सव 2 मार्च को रखा, जो जनरली मार्च एन्ड में होता है। इस बार आगे रख दिया। जब **दिनकरभाई को** बताया कि 2 मार्च के फंक्शन के लिए एक हफ्ता और रुक जाओ, तो खुशी से 'हाँ' कह कर एकदम सरलता से तैयार हो गए। उनका आगे का प्रोग्राम शॉर्ट भी कर दिया, क्योंकि **गुरुजी के फंक्शन की** उन्हें **महिमा है।** तो कहना यही है आज गुरुजी के प्रागट्य अवसर पर जो सब बातें सुनीं, वो जीवन में हमें दृढ़ करने जैसी हैं। हमें कुछ करना नहीं है। दिव्यांगभाई ने बहुत अच्छा बताया कि हम उनके साथ रह कर, बस उन्हें देखते रहें। उसकी दो-तीन बात मुझे भी बहुत जंच गई और बहुत डीप बातें बताई, उसके ऊपर सबको सोचना पड़ेगा।

गुरुजी खुद भी कह रहे हैं कि हम भी सोचने के लिए मजबूर हो जाएँगे। उसने बहुत अच्छा बताया कि गुरुजी हमारा सब कुछ कर ही रहे हैं। हमें पता नहीं है, मगर **हमारा काम हो जाए तो ही हमें लगे कि गुरुजी कर रहे हैं ऐसा नहीं है। वे हमारी चेतना के बारे में सोचते ही हैं और वे हमें इसी तरह आगे ले रहे हैं।** दूसरी बात बहुत अच्छी बताई कि जब मैं **कोई भी समैया या कोई भी सेवा करूँ-उत्सव**

मनाऊं, उसमें वही देखूं कि मेरा गुरुजी के साथ दिव्यभाव का संबंध कितना दृढ़ हुआ ? काकाजी एक प्रसंग हमें बार-बार बताते थे कि योगीजी महाराज जब अफ्रीका में थे, तब सब भक्त लोग गए थे। एक बार योगीजी महाराज ने सभा में सबसे पूछा– *सत्संग कैसा हुआ ? विचरण कितना हुआ ?*

बारी-बारी सबसे पूछने लगे।

तो किसी भक्त ने बोला –*बापा, काफी सारे भक्तों ने आपके हाथ से कंठी पहनी, इतना ज्यादा सत्संग बढ़ गया।*

बापा बोले –*वो नहीं।*

किसी ने कहा –*बापा, कितने भक्तों ने तो आपकी मूर्ति-पूजा ली।*

बापा बोले –*वो नहीं।*

किसी ने कहा –*बापा आपकी सभा में हज़ारों लोग आए और इतने सारे लोगों ने लाभ लिया, दर्शन किया।*

बापा बोले –*वो नहीं।*

तब काकाजी ने बापा से प्रार्थना की –*आप ही बताएँ ?*

तब बापा बोले –*आप कितने ब्रह्मरूप बरते ? वो सत्संग हुआ।*

वो बात दिव्यांगभाई ने की। बहुत अच्छा लगा कि हमारा सबसे बड़ा तोल-माप यही है कि **हम उनके साथ में जितना सुहृद्भाव रखेंगे, उतना उनके साथ हमारा संबंध बढ़ेगा।** उनके साथ हमारी ये सुहृद्भाव की या एकत्वभाव की बात है। वो जितना हम प्रयत्न करेंगे, उतना हमने यह समैया-उत्सव मनाया। तो, आज सच्चे हृदय से यही प्रार्थना करनी है। आज भले दो-तीन जनों ने बात की, मगर शिविर टाइप की बात हो गई और अच्छा आनंद आया।

दूसरा (दिव्यांग ने) बोला कि गुरुजी हमें तैयार कर रहे हैं कि भजन करो-भजन करो और हमें यह बताना चाहते हैं कि मैं बाद में नहीं होऊँगा, तो आप उसके लिए तैयार हो जाओ। मगर एक्चुअली तो बात ऐसी है, उसने भले ऐसा बताया मगर वे हमारे साथ अखंड रहने वाले ही हैं और हमें हमेशा गाइडन्स देने वाले ही हैं, वे कभी जाते ही नहीं। **काकाजी स्वधाम गए, तब से आज तक देखते हैं कि अब भी वे ही सब कर रहे हैं। हम मानते हैं कि हमने किया है, मगर एक्चुअली सब प्रेरणा, सब कुछ वे ही देते हैं, कराते हैं और वे ही रोकते हैं कि नहीं करो-ऐसा करो** और गुरुजी भी ऐसे प्रसंग बताते हैं। तो, कहना यही है कि **हमारी पूरी जिम्मेदारी उन्होंने उठाई हुई है और हम जब तक मंजिल पर नहीं पहुंचेंगे, तब तक वे हमें छोड़ने वाले नहीं हैं और हम भी उन्हें छोड़ नहीं पाएँगे, यह भी उतना ही सही है।**

तो, आज इसी प्रार्थना के साथ हमें दिनकरभाई या गुरुजी का अच्छी तरह से लाभ लेना है; वो ले पाएँ और इसके लिए आज सच्चे हृदय से महाराज, स्वामी, साक्षात गुणातीत स्वरूपों और सभी संतों के चरणों में यह प्रार्थना है कि हमें प्रत्यक्ष का ऐसा संबंध–जिसे भी हम मानते हैं, उसके साथ का बने। सभी मुक्तों ने यह बात अच्छी बताई कि हमें सबकी कमी नज़र आती है कि फलां ने यह नहीं किया, ढिकना ने यह नहीं किया,

यह ऐसा है-वैसा है, वो देखने में हमारा पहला नंबर है। उसमें से हम हरेक का गुण लेते हो जाएं। जैसे दिव्यांगभाई ने अच्छा बताया कि–हम खाली दीदी का इतना ही देखें कि उसने कितनी परेशानियां सहन की हैं और फिर भी वो हँसती हुई इसी तरह से बैठी हैं, तो भी हमें उससे प्रेरणा ही नहीं, मगर अंदर से स्ट्रेन्थ मिलेगी और वो बात बहुत बड़ी है। ऐसे मुक्तों का जब हम ऐसा गुण (दिल की सच्चाई से) ग्रहण करते हो जाएँगे, तो हमारी साधना एकदम सरल हो जाएगी और हमारा आनंद कभी जाएगा नहीं। फलस्वरूप हमेशा उनके साथ का संबंध भी बढ़ता रहेगा। तो ऐसा हम कर पाएँ–यही आज सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई (शिकागो)

...जब भी इधर आते हैं, तो बहुत अपनापन लगता है, बहुत आनंद आता है। इतने शॉर्ट टाइम के अंदर गुरुजी के साथ हमारे देवेशभाई का इतना संबंध जो दिखता है, वह बहुत पहले से है। योगीजी महाराज इस बारे में ऐसा कहते थे कि हम पूर्व के हैं, वह कैसे पता चले? तो जब भी ऐसे गुणातीत स्वरूप या उनके संबंध वाले यानि– 'दास के दास' को भी मिले और **लव एट फर्स्ट साइट हो जाए, तो मान लेना की हम पूर्व के हैं।** यूँ आप और हम ऐसे ही संबंध वाले हैं, तभी हमें ऐसा ही लव एट फर्स्ट साइट हो गया।

हमारे चांद साहब के साथ हम थोड़ी बातें कर रहे थे। वो भी बता रहे थे कि '75 के आसपास काकाजी के साथ पहली बार मुलाकात हुई थी और लव एट फर्स्ट साइट हो गया। काकाजी एरोप्लेन से आए थे; बाकी सबको तो उन्होंने ए-103 (पुराना मंदिर) जाने के लिए कह दिया, लेकिन बोले कि मुझे तो चांद के साथ उसके घर जाना है और वहीं पकौड़ा और परांठा खा कर आएँगे। पकौड़ा और परांठा तो एक निमित्त था, मगर वे ऐसी भावना वाले थे, तो काकाजी को वहाँ जाने का दिल होता था। ऐसे जब भी किसी के साथ पहली मुलाक़ात में ऐसा लगे कि ये हमारे बहुत पुराने हैं, तो मान लेना कि हम पूर्व के हैं, वर्ना तो ऐसा जाना हो ही नहीं सकता है। हमारे वशीभाई के बर्थडे के दिन 7 जुलाई 1973 शिकागो में मुझे भी पहली बार काकाजी के दर्शन हुए, उनसे संबंध हुआ। पहली बार में ही काकाजी के दर्शन से ऐसा लग गया कि वे बहुत प्यारे हैं। वहाँ करीब 35-40 हरिभक्त बैठे थे। मेरे दिल में ऐसा हुआ कि हम 150 माइल दूर से आए हैं, तो काकाजी हमारे घर पर आकर उसे पावन करें। मैं मन में सोच ही रहा था और काकाजी सबको छोड़कर हमारे पास आ गए और बोले कि इस टाइम मेरा प्रोग्राम बहुत टाइट है, लेकिन दूसरी बार जब मैं आऊंगा तो आपके यहाँ जरूर आऊंगा। देखो, अंतर की बात पकड़ कर हमें तसल्ली दे दी कि वो आने वाले हैं। जबकि हमारी समझ ऐसी होती है कि इतनी दूर कब आएँगे? लेकिन, हम जब पॉज़िटिव लेते हैं, तो वे हमारे प्रारब्ध में से कोई ऐसा प्रोग्राम निकाल कर, बाकी सब हटा कर नज़दीक ले आते हैं। **हमारे ही प्रारब्ध का उपयोग करके हमें ही आगे ले जाते हैं** और... ऐसा ही हुआ कि विध इन वन वीक मेरा एपेन्डीक्स का ऑप्रेशन हुआ और तब तो एपेन्डीक्स ऑप्रेशन इतना छोटा-छोटा होल करके नहीं करते थे कि जल्दी रीकवर हो जाए, लंबा काटते थे...

जब काकाजी को पता चला कि मेरा ऑप्रेशन हुआ है। तो उन्होंने न्यूयार्क से मुझे फोन किया कि आपसे मिलने आना है। देखा जाए तो काकाजी 1973 के बाद चार साल के बाद अमेरिका 1977 में आए थे। यूँ हमारे भाग्य में तो 4 साल का था। लेकिन एपेन्डीक्स के ऑपरेशन का सॅटींग भी उन्होंने ही किया होगा। क्योंकि जब मैं डॉक्टर के पास भी गया था, तो वह बोला कि इतना प्रॉब्लमेटिक नहीं है, एक्युट एपेन्डीसाइटिस नहीं है। पर, आपको अभी करवाना है तो अभी करवाओ या जब फिर से प्रॉब्लम आए तब करवाना हो तो तब। मैंने बोला कि फिर प्रॉब्लम आने पर क्यों करवाना? अभी आपके पास आया हूँ, तो कर दो और ऑपरेशन कर दिया। मगर आज सोचते हैं, तो लगता है कि यह **सब काकाजी का कंट्रोल था।** उन्होंने ही ऐसी सिच्युएशन क्रियेट की और हमारे प्रारब्ध को ही हमारे लिए आगे बढ़ाया। वे जब मुझसे मिलने आए, तब खूब संबंध बढ़ा। मुझे याद है कि वे आए थे। मगर इतना सॉलिड याद नहीं कि उन्होंने क्या-क्या किया था, क्योंकि मैं तो वो दर्द के कारण सोता रहता था। लेकिन, साहेब दादा उस समय विडियो या कैमरा लेकर आए थे। अभी घनश्यामभाई ने अश्विनभाई से वो पुरानी विडीयो में से लेकर हमें भेजा। तब की वीडियो है, जिसमें काकाजी आए हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं।

देखो, **हम बड़े पुरुष के प्रति थोड़ी-सी भी अच्छी भावना करेंगे, तो बाकी सब वे कर देते हैं। बस एक पॉज़िटिव भावना रखनी है कि वे हितकारी हैं, मंगलकारी हैं।** हमारे चांद साहेब कहते हैं कि कभी-कभी ऐसी प्रॉब्लेम आती है, तो हम थोड़े हिल जाते हैं। वे यह भी बता रहे हैं कि **कभी-कभी हम अपने ही विचार में रहते हैं, तो बड़े पुरुष हमें ब्रेक लगाकर भी वापिस लाते हैं।** वे एच.के.एल. भगत की बात बता रहे थे कि एच.के.एल. भगत जब प्रॉब्लम में थे और उन्हें पनिशमेंट होने वाली थी, जो सब न्यूज़ पेपर में भी आया था। चांद साहेब काकाजी को उसकी बात बता रहे थे कि भगतजी का ऐसा होने वाला है। पर, काकाजी तो जानते थे कि उसका क्या होने वाला है। काकाजी का मुंह एकदम लाल हो गया और कहने लगे–*तू ये क्या बोलता है, एच.के.एल. भगत को कुछ होने वाला ही नहीं है, वो तो कॅबिनेट मिनिस्टर हो जायेगा। जहां था उससे आगे बढ़ेगा।* चांद साहब सोचने लगे कि काकाजी ये क्या बोल रहे हैं? न्यूज़ पेपर में तो ऐसी सब चीज आई है। फैक्ट यह है और काकाजी दूसरी बात बता रहे हैं। लेकिन वो गणित अलग था। उसने सत्संग की जो ये सेवा कर दी थी, वो करोड़ों का कमा लिया था। वड़ताल के वचनामृत में लिखा है कि हम जो सोचते हैं, ऐसा नहीं है। उसका जो **सत्पुरुष के साथ संबंध हो गया है, वो सबसे बड़ा है।** उसे समाधि भी हो जाती है। तो हम भी नेगेटिव मेमरी में ड्वेलिंग न करें। **ज़्यादातर हमारी आदत यही रहती है कि हमारी पुरानी जो भी कमी है, उसके अंदर हम चले जाते हैं और उसके अंदर हम दुःखी होकर आनंद नहीं कर पाते।** लेकिन उसके बजाय कौन मिले हैं, उसके पोज़िटिव विचार में चले जाएँ और नेगेटिव को हटा दें। हम जितना पोज़िटिव सोचते रहेंगे, जितना ज़्यादा से ज़्यादा पॉज़िटिव महिमा में रहेंगे, उतना फ़ायदा ही फ़ायदा है...

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 22.7.'14,	मंगलवार	—	एकादशी – व्रत
(2)	दि. 27.7.'14,	रविवार	—	श्रावण मास – प्रारंभ
(3)	दि. 7.8.'14,	गुरुवार	—	पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।)*
(4)	**दि. 10.8.'14,**	**रविवार**	**—**	**श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन** ***(सुबह 9:00 से 11:00 प.पू. गुरुजी से शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने के लिए महापूजा - प्रार्थना करेंगे।)***
(5)	दि. 15.8.'14,	शुक्रवार	—	भारत का स्वातंत्र्य दिन, रांधण छठ (षष्ठी)
(6)	दि. 16.8.'14,	शनिवार	—	शीतला सातम (सप्तमी)
(7)	दि. 17.8.'14,	रविवार	—	**जन्माष्टमी** – व्रत
(8)	दि. 21.8.'14,	गुरुवार	—	एकादशी – व्रत
(9)	दि. 25.8.'14,	सोमवार	—	श्रावण मास – समाप्त
(10)	दि. 29.8.'14,	शुक्रवार	—	गणेश चतुर्थी
(11)	दि. 1.9.'14,	सोमवार	—	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन**
(12)	दि. 5.9.'14,	शुक्रवार	—	जलझीलनी एकादशी – व्रत
(13)	दि. 6.9.'14,	शनिवार	—	वामन जयंती
(14)	दि. 8.9.'14,	सोमवार	—	अनंत चतुर्दशी
(15)	दि. 9.9.'14,	मंगलवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
(16)	दि. 12.9.'14,	शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व
(17)	दि. 18.9.'14,	गुरुवार	—	भगवान स्वामिनारायण का स्मृति पर्व
(18)	दि. 19.9.'14,	शुक्रवार	—	एकादशी – व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
(19)	दि. 20.9.'14,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
(20)	दि. 21.9.'14,	रविवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एवं अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A - 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI - 110 052